शुभसमय वैदिक फाउंडेशन का प्रकाशन

जुलाई 2025 30/-

वर्ष : 1 अंक : 1

व्हाइट प्रिंट

PRGI No. HRHIN/25/A0111

अहा जिंदगी

दीदी मां

पृष्ठ 12

शिक्षा को उपयोगी बना रहे हैं ऋषिपाल चौहान

पृष्ठ 14

कैलाश सी ऊंची सेवा करने वाले कैलाश शर्मा

पृष्ठ 16

धर्मयोगी, कर्मयोगी समाजयोगी हैं योगी तेजपाल सिंह

We used communication as main tool for
our business & now for yours....

you and we are not 2 but 11

future reshaping

image re-building

social media enhancement

content services

personality presentation

PR management

brand identity & consulting

value adding video stories

Mainstream Media

5B/1, NIT 5, Neelam Railway Road, Faridabad, Haryana

Tel.: 9599049578 Email : todaybhaskar99@gmail.com

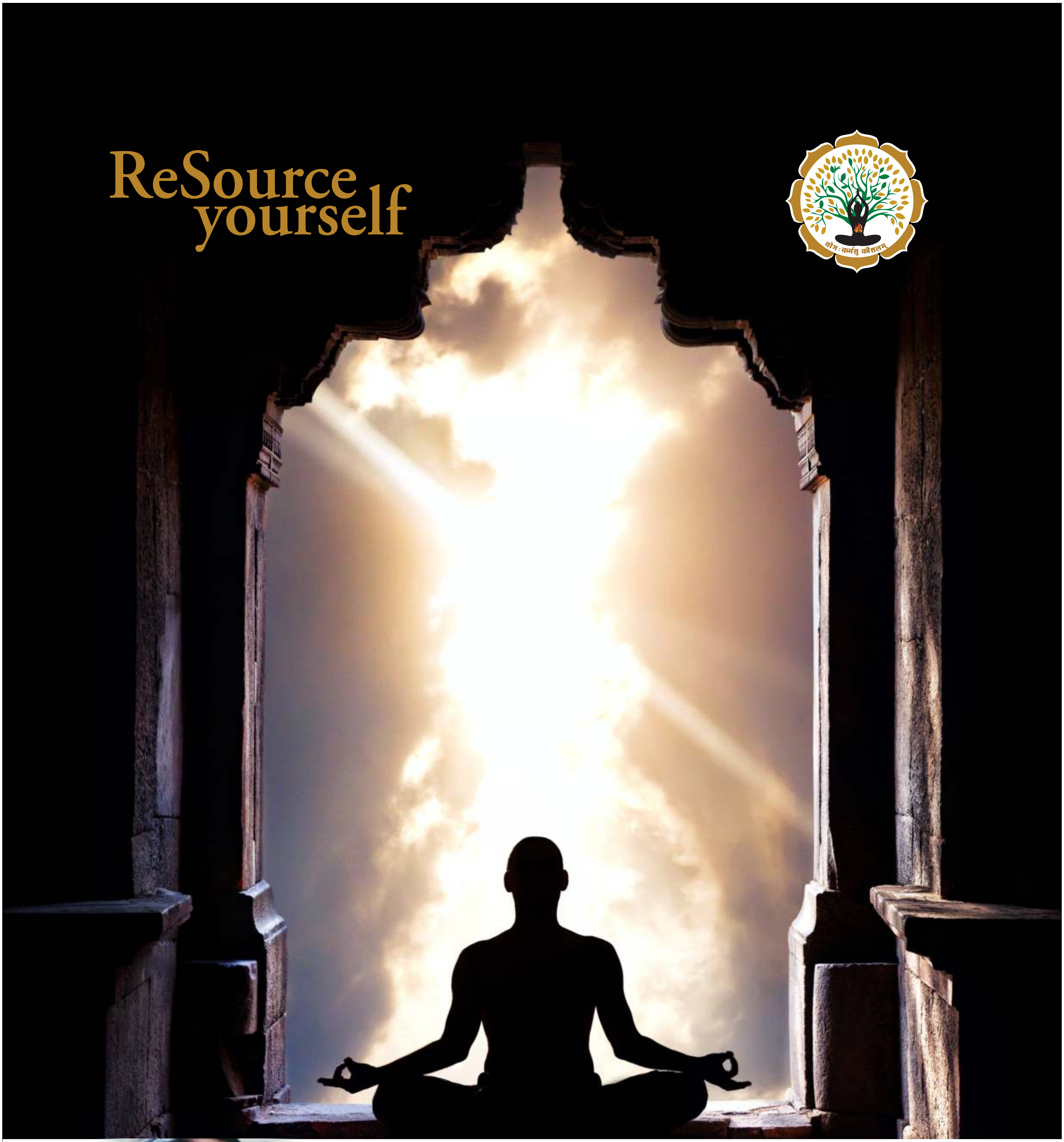

Strengthen your Body, Mind & Soul

Do practice Meditation daily or call 9911161753 for guidance

Shakun Raghuvanshi (Meditation Facilitator)

शुभसमय वैदिक फाउंडेशन का प्रकाशन

व्हाइट प्रिंट

30/-

वर्ष : 1 अंक : 1

जुलाई 2025

अहा जिंदगी

आवरण कथा

फायर ब्रैंड साध्वी से पद्म भूषण तक दीदी मां का सफर

रमेश गुप्ता-एक सशक्त गौभक्त राष्ट्रभक्त pg 09
मन को मोह लेते हैं मनमोहन गुप्ता pg 10
जन आरोग्य की सेवा में राजकुमार अग्रवाल pg 11
शिक्षा को उपयोगी बना रहे ऋषिपाल चौहान pg 12
कैलाश सी ऊंची सेवा करने वाले कैलाश शर्मा pg 14
नगर निगम में हैट्रिक मारने वाला अकेला पार्षद अजय बैंसला pg 15
धर्मयोगी, कर्मयोगी, समाजयोगी योगी तेजपाल सिंह pg 16
श्री खाटू श्याम हमारे कुलदेवता-अजय गौड pg 23
परफैक्ट है जी- हरविंद कुमार बत्रा (एचके बत्रा) pg 24
मैं भारत हुं, बल्लभगढ वाला शिक्षाविद pg 25
जिद है कि बेटियां पढें बढें - दीपक यादव pg 28
आज पारिवारिक शिक्षा भी जरूरी-नन्दराम पाहिल pg 29
लाल किताब के एक्सपर्ट हैं सर्वोत्तम ऋषि pg 32
समर्पण भाव वाली सेवा साधिका मधु गुप्ता pg 35
शहर में रक्त की कमी को दूर कर रहे उद्यमी प्रेम पसरीचा pg 38

Holy Blessings
Shrimad Jagadguru Ramanujacharya
Swami Sudarshanacharya Ji
Founder-Shri Sidhdata Ashram,
Faridabad, Haryana

Editor

Shakun S Raghuvanshi

Printed and published by Shakun Shivram Raghuvanshi for and behalf of Shubhsamay Vaidik Foundation and printed at Joy Printers, 3G, 142, NIT, FARIDABAD, HARYANA - 121001 and published from 5B/1, NIT, Neelam Railway Road, Faridabad, Haryana,121001
Editor : Shakun S Raghuvanshi.

All above posts are Honorary & Voluntary.
The Names are given not to subject any order.

आदरणीय मित्रो

दोस्तो ! ***व्हाइट प्रिंट*** वास्तव में एक पत्रिका मात्र नहीं है, जिसमें कुछ आर्टिकल आपको पढ़ने को मिलेंगे और आप उन्हें यूं ही पढ़कर आगे बढ़ जाएंगे। हमारा प्रयास रहेगा इसके साथ आपकी तारतम्यता बैठे, आपको इसके हर अंक का इंतजार रहे, तभी हमारी कोशिश सफल कहलाएगी। इसके लिए हमारी टीम पूरे जतन से जुटी हुई है।

इस पत्रिका में होंगी जिंदगी की बातें, आपके जीवन के अनुभव, आपके निज स्वरूप के बारे में जानकारियां और वो गपशप जो आपसे आपकी बात करे, वो बातें जिनसे आपका सीधा सरोकार हो। आपका वह रूप समाज जाने, जिसके बारे में वह अब तक अनभिज्ञ था और आप खुद भी। आपके सामान्य स्वरूप से अलग उनके बारे में बातें होंगी, जो बाकी जानना चाहते हैं। पत्रिका राजनैतिक धड़ों की बातें नहीं करेगी लेकिन उन सब मामलों में सहभागिता करेगी जिनसे समाज का सीधा सरोकार हो।

हम आपके पहनने-ओढ़ने, खाने-पीने, चलने-फिरने, घूमने-टहलने, रहने-सोने आदि सभी प्रकार की जरूरतों को और बेहतर बनाने की सामग्री भी पत्रिका में संजोएंगे। एक ऐसी पत्रिका जो आपके समाज के बारे में न केवल बात करे बल्कि उन दुश्वारियों को भी समझे, जिनसे आपका साबका हर रोज होता है, न केवल होता है बल्कि आप आक्रांत होकर दूसरों पर भड़ासते हैं। हम इस भड़ासपने को समूल नष्ट करने का जरिया बनना चाहते हैं।

हम कोशिश करेंगे कि आपकी परेशानियों के हल भी आपके साथ साझा करें। इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी विशेषज्ञों की राय लेंगे और प्रयास करेंगे कि आपकी उनके साथ लय बन जाए। इसके लिए हमें आपका सहयोग, समर्थन एवं सुझाव निरंतर प्राप्त होते रहेंगे, इसी आशा के साथ

व्हाइट प्रिंट परिवार में शामिल होने, सहयोग एवं समर्थन देने पर हम आपका हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

शकुन रघुवंशी
संपादक

आवरण कथा

फायर ब्रैंड साध्वी से पद्म भूषण पाने तक दीदी मां का सफर

वात्सल्य ग्राम की संस्थापक दीदी मां साध्वी ऋतंभरा को भारत सरकार ने अपना तीसरा सर्वोच्च पुरस्कार देकर एक परंपरा को सम्मानित किया है।

साध्वी ऋतंभरा जी, जिन्हें स्नेहपूर्वक दीदी माँ कहा जाता है, एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक नेता हैं जिनका भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म के प्रति गहरा सम्मान है। उनका जीवन और कार्य समाज सेवा और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

साध्वी ऋतंभरा की आध्यात्मिक यात्रा आचार्य महामंडलेश्वर युगपुरुष स्वामी परमानंद जी महाराज के मार्गदर्शन में प्रारंभ हुई। भारतीय शास्त्रों और आध्यात्म के गहन अध्ययन ने उन्हें सांसारिक सुख-सुविधाओं का त्याग करने के लिए प्रेरित किया, जिससे वे भारत माता की भावना को साकार कर सकें। वे दृढ़ता से मानती हैं कि हर आत्मा के पास, चाहे वह कितना भी धनी-सम्पन्न क्यों न हो, एक दिव्य उद्देश्य है।

दीदी माँ का जीवन -मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है, कहावत को साकार करता है। उनकी करुणा उन त्यागी हुई महिलाओं और बच्चों तक पहुँचती है, जिन्हें वे अपने वात्सल्य ग्राम के माध्यम से पालन-पोषण का वातावरण प्रदान करती हैं। ये गाँव जरूरतमंदों को प्रेम और देखभाल प्रदान करते हैं, विशेष रूप से शिक्षा और सशक्तिकरण पर जोर देते हुए, खासकर बच्चों के

लिए जो भविष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

साध्वी ऋतंभरा एक शक्तिशाली वक्ता हैं जो अपनी सरलता और गहरी अंतर्दृष्टि से लोगों के दिलों को छू जाती हैं। उनके प्रवचन प्रेम और भक्ति की भावना जगाते हैं, और श्रोताओं पर गहरा प्रभाव छोड़ जाते हैं। वे उदाहरण प्रस्तुत करके नेतृत्व करती हैं, केवल शब्दों के माध्यम से ही नहीं बल्कि अपने आचरण से भी सबक सिखाती हैं। उनकी शिक्षाएँ हिंदू धर्म और उसके मूल्यों का सार दर्शाती हैं।

वात्सल्य ग्राम के कार्य के अलावा, दीदी माँ एक ऐसी दुनिया का विज़न रखती हैं जहाँ भारतीय विरासत और संस्कृति की रक्षा हो। उन्होंने आध्यात्मिक और शारीरिक विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण और पर्यावरणीय चेतना को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न अवधारणाएँ पेश की हैं।

साध्वी ऋतंभरा का वात्सल्य ग्राम परियोजना के प्रति समर्पण भारत और अन्य विकासशील देशों में इसके प्रसार की क्षमता रखता है। उनके गहरे भाषणों और आध्यात्मिक शक्ति ने उन लोगों पर अमिट छाप छोड़ी है जिन्हें उन्हें सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

साध्वी ऋतंभरा जी एक ऐसी महान आध्यात्मिक गुरु हैं जिन्होंने वात्सल्य ग्राम परियोजना के माध्यम से अनाथ बच्चों के लिए समर्पित अपना जीवन व्यतीत किया है। उनके गहरे भाषण और आध्यात्मिक ज्ञान ने भारत और अन्य विकासशील देशों में उन लोगों पर गहरा प्रभाव डाला है जिन्हें उनके संदेश को सुनने का सौभाग्य मिला है।

साध्वी ऋतंभरा जी का विचारधारा और उनका कार्य किसी भी धर्म, जाति या समुदाय से ऊपर है, और उन्होंने अनाथ बच्चों के प्रति अपनी अद्भुत मातृभावी भावना को दर्शाया है। उन्होंने वत्सल्य ग्राम की स्थापना की है, जो एक ऐसी जगह है जो अनाथ बच्चों के लिए एक सुरक्षित और प्यार भरा घर प्रदान करती है। वह यह मानती हैं कि हर एक बच्चे को दिव्य और अनमोल माना जाना चाहिए और वह उनके सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वात्सल्य ग्राम में गरीब बच्चों, युवा लड़कियों और बुजुर्ग महिलाओं आश्रय प्राप्त होता है। जहां बच्चे मुफ्त शिक्षा और महिलाओं को निशुल्क आवास और भोजन प्राप्त होता है।

साध्वी ऋतंभरा का जन्म 1964 में पंजाब के लुधियाना जिले के एक छोटे से गांव मंडी दोराहा में हुआ था। माता-पिता ने उनका नाम निशा रखा था। कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद वे

असाधारण प्रतिभा को पद्मभूषण पुरस्कार

कथावाचक और असाधारण वक्ता के रूप में विख्यात साध्वी ऋतंभरा को समाज सेवा के लिए पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर उन्हें पद्म भूषण सम्मान देने का ऐलान किया गया था, जिसके बाद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें प्रद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। ये सम्मान उन्हें सामाजिक कार्यों और राम मंदिर आंदोलन में उनके योगदान के लिए मिला है।

राष्ट्रपति से सम्मानित होने के बाद साध्वी ऋतंभरा ने कहा कि इस सम्मान से परमशक्ति पीठ और वात्सल्य ग्राम के वह सभी सहयोगी सम्मानित हुए हैं, जिन्होंने मानव सेवा के कार्यों में अपना सर्वस्व समर्पित किया। उन्होंने इस पुरस्कार को अपने गुरु स्वामी परमानंद गिरि के चरणों में समर्पित किया है।

पद्म भूषण भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।

हरिद्वार के संत स्वामी परमानंद गिरि से प्रभावित हुईं और उन्हें अपना गुरु मान लिया। इसके बाद उन्होंने संन्यास ले लिया और विश्व हिंदू परिषद के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने लगीं। 1980 और 90 के दशक में साध्वी ऋतंभरा को हिंदुत्व का चेहरा माना जाता था। वे भारतीय जनता पार्टी का प्रमुख चेहरा थीं और देशभर में श्री राम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। आंदोलन के दौरान संत और अन्य लोग प्रभावशाली हिंदू नेताओं की तलाश कर रहे थे। इसी दौरान साध्वी ऋतंभरा अपने गुरु के आदेश पर श्री राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति की सदस्य बन गईं।

देशभर में विश्व हिंदू परिषद के मंचों से हिंदुत्व पर दिए गए अपने भाषणों से वह सुर्खियों में रहीं। उन्होंने एक बार कहा था कि एक दिन ऐसा आएगा जब भारत की हर गली वृंदावन कहलाएगी, लोग मां भवानी का जयकारा लगाएंगे और गर्व से कहेंगे कि वे हिंदू हैं।

1995 में साध्वी ऋतंभरा अपने फायर ब्रांड भाषणों के लिए चर्चित हो रही थी। उस दौर में ही इंदौर की एक जनसभा में उन्होंने धर्म परिवर्तन कराने वाली ईसाई मिशिनरी पर विचार रखे। तब तत्कालीन सीएम दिग्विजय सिंह के आदेश पर पुलिस ने साध्वी को भड़काऊ भाषण देने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। वह 11 दिनों तक जेल में रहीं। हाई कोर्ट से जमानत के बाद वह रिहा हुईं। 2022 में उनका नाम फिर चर्चा में आया, जब अमेरिका में न्यू जर्सी के चर्च ने उनकी यात्रा का विरोध किया।

राम मंदिर आंदोलन के दौरान साध्वी ऋतंभरा के भाषण पूरे देश में सुगंध की तरह फैल गए थे। उनके भाषणों से उनके राजनीतिक विरोधी भी प्रभावित थे। एक समय ऐसा भी था जब उन्होंने एक ही दिन में 10 धार्मिक सभाएं की थीं। 1992 में उन्होंने अपने गुरु का आशीर्वाद लेकर परम शक्तिपीठ नामक सामाजिक संस्था की स्थापना की और धीरे धीरे राजनीतिक बयानों और कार्यक्रमों से दूरी बना ली।

साध्वी ऋतंभरा को देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में कई पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें ह्यूस्टन शहर के मेयर, पर्ल लैंड शहर के मेयर, टेक्सास के दो मेयरों के कार्यालय, लॉस एंजिल्स काउंटी और अमेरिका में भारत के महावाणिज्य दूतावास द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

वत्सल ग्राम के रूप में एक अद्भुत सामाजिक व्यवस्था

बनाने के लिए उनकी वात्सल्य ग्राम संस्था का नाम गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल है।

कुछ लोग जन्म से ही महान होते हैं जब कि कुछ लोग अपने सद्कर्मों से न केवल महान बन जाते हैं बल्कि इतिहास बना जाते है। दीदी मां उनमें से एक हैं।

साध्वी ऋतंभरा अपने अंदर आए सेवा के बीज के प्रस्फुटन का श्रेय अपने गुरू श्री परमानन्द महराज को देती हैं। जिस समय साध्वी ऋतंभरा का सन्यास हुआ उस समय भारत में स्त्रियों के सन्यास की प्रथा न के बराबर थी किंतु उनके गुरू ने साध्वी ऋतंभरा को सन्यास की दीक्षा देकर नारी को गौरव दिलाया था। बहुत कुरेदने पर वे बताती हैं कि कुछ अनाथ आश्रमों व महिला आश्रमों को देखने और वहां ब%चियों का ठीक से रखरखाव न होता देख उनके अन्दर वात्सल्य भाव जागृत हुआ। इसके बाद उन्होंने निश्चय किया कि किसी ब%चे या बच्ची को देवकी की कोख भले न दे पाएं पर उसे यदि यशोदा की तरह गोद पा जाय तो वह भी कान्हा की तरह प्रेम पा सकता है।

इसी विचार के साथ 1997 में सड़क पर एक बेसहारा बच्चे को देखकर उन्होंने उसे गोद में लेकर वृंदावन वात्सल्य यात्रा शुरू की। नेत्र चिकित्सालय, विशेष बच्चों के लिए नि:शुल्क प्रशिक्षण केंद्र, महिलाओं के लिए नि:शुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, नि:शुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, कामधेनु गौगृह गौशाला आदि अनेक प्रकार की सेवाएं प्रदान की जाती हैं और इनकी अधिकांश संस्थाएं उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात

में हैं। एक प्रार्थना है, वर दो भगवन हर मानव में तेरे दर्शन पाएं , मानवता अपनाएं। प्रार्थना की इन लाइनों को साध्वी ऋतंभरा ने न केवल अपने जीवन में आत्मसात किया बल्कि उसे व्यवहारिक रूप दिया। इसीलिए वे साध्वी ऋतंभरा से दीदी मां बन गई। उन्होंने समाज के ऐसे तबके के साथ सेवा का प्रकल्प शुरू किया जिसे कोई भी और यहां तक उस बच्ची की मां तक स्वीकार करने को तैयार नहीं होती। उन्होंने समाज से परित्यक्त बच्चियों को न केवल स्वीकार किया बल्कि उन्हें प्यार दिया जिससे वे उनकी दीदी बन गईं और मां की तरह उनका पालन पोषण किया जिससे वे उनकी मां बन गईं।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में एक नया अध्याय जोड़ा और समाज की परित्यक्त बच्चियों के लिए दादी, मौसी और नानी इस परिवार की अभिन्न अंग बनी तो दीदी और मां वे स्वयं बनी। इसका असर यह हुआ कि बच्चियों को ऐसी संस्कारयुक्त शिक्षा मिली कि वे समाज के लिए वरदान बन गई।

वर्तमान में वात्सल्य ग्राम में अन्य सेवा प्रकल्पों के शुरू होने से दादी, मौसी, मां और नानी की भूमिका अन्य ऐसी महिलाएं भी कर रही हैं जिनकी शिक्षा वात्सल्य ग्राम में ही हुई है। इस विद्यालय में भाव के संबंध रक्त के संबंधों से अधिक प्रगाढ़ है।

कहा जाता है कि हीरे या नीलम की पहचान उसका असली पारखी ही कर सकता है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री रामप्रकाश ने राम जन्मभूमि आंदोलन के समय साध्वी ऋतंभरा के प्रभावी भाषणों को सुना तो उन्होंने अंदाजा लगा लिया कि इस साध्वी में समाज के लिए कुछ करने की लालसा है। उन्होंने वात्सल्य ग्राम की आधारशिला में मूलभूत सहयोग किया।

दीदी मां ने वात्सल्य ग्राम में बच्चियों को आत्म निर्भर बनाने से लेकर आत्मरक्षार्थ जीवन बिताने की शिक्षा दी वहीं उनके अंदर देश प्रेम की भावना जागृत करने के लिए बच्चियों को सीमा पर ले जाकर जवानों के राखी बांधने का सराहनीय कार्य किया। देश सेवा के कार्य को आगे बढ़ाते हुए लड़कियों के लिए सैनिक स्कूल खोलने का निश्चय किया तथा वात्सल्य ग्राम में देश के पहले बालिका सैनिक स्कूल की शुरूवात 1 जनवरी 2024 से हो गई है। भारत सरकार के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह देश के प्रथम बालिका सैनिक स्कूल का लोकार्पण किया है।

आज उन्हें लाखों लोग दीदी मां के नाम से पुकारते हैं। वह रामकथा और श्रीमदभगवत को लेकर भी प्रवचन करती हैं।

रमेश गुप्ता

एक सशक्त गौभक्त राष्ट्रभक्त

जिस उम्र में बच्चों को अपने भोजन का चुनाव करना नहीं आता है, उस उम्र में रमेश गुप्ता ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का चयन अपने लिए कर लिया था। यह परिवार के संस्कार थे या पूर्वजन्म के प्रारब्ध लेकिन वह एक बार स्वयंसेवक बन गए तो बन गए।

फरीदाबाद में रहने वाले रमेश गुप्ता विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय कोषाध्यक्ष हैं। वह विहिप द्वारा फरीदाबाद में संचालित गोपाल गौशाला के अध्यक्ष भी हैं। जब हमने उनसे बात की तो अंदर से एक उम्दा चरित्र भारतीय दिखाई दिया।

वास्तव में हरियाणा के सिरसा स्थित मंडी डबवाली के मूल निवासी रमेश गुप्ता का पूरा परिवार 1982 में फरीदाबाद की ओर रुख कर गया और फिर यहीं बस गया। परिवार निर्माण उद्योग में स्थापित नाम था जो अब तक आजीविका का केंद्र है। मंडी में अपनी शिक्षा पूरी करने के दौरान ही उन्होंने अपनी संगठन क्षमता को प्रदर्शित कर दिया था। तब दहेज के कारण बेटियों की बलि चढ़ने की खबरों ने युवा रमेश को आंदोलित कर दिया और उन्होंने कॉलेज स्तर पर दहेज विरोधी सैल का गठन कर दिया। उनके संयुक्त प्रयासों से युवाओं को दहेज की बुराई के प्रति जागरुक किया गया। इस सैल का उस क्षेत्र में इतना दबदबा हो गया कि लोगों के मन से दहेज का दानव मिटने लगा।

विहिप के सबसे युवा जिलाध्यक्ष के रूप में रमेश गुप्ता को विष्णु हरि डालमिया ने सम्मानित किया। यह सफर फरीदाबाद के जिलाध्यक्ष से प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय कोषाध्यक्ष के रूप में जारी है। वह कहते हैं कि इस सरकार में अब हिन्दुओं की भी सुनी जा रही है। वह कहते हैं कि तत्कालीन विहिप अध्यक्ष अशोक सिंहल कहते थे कि समय लगेगा लेकिन श्रीराम मंदिर जरूर बनेगा। आज श्रीराम मंदिर को देखकर जीवन सफल लगता है। रमेश गुप्ता कहते हैं कि इंसान को काम वो करना चाहिए कि नींद के लिए रात को गोली न खानी पड़े। कहते हैं कि वह आज जो भी हैं, पिताजी से मिले संस्कारों की वजह से हैं।

चांदनी चौक की बेबाकी, शाहदरा की निडरता और संघ के संस्कारों से ओतप्रोत मनमोहन गुप्ता आरएसएस के प्रचारक रहे हैं और ताउम्र उस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के लिए कार्य करने के लिए संकल्पित हैं...

मन को मोह लेते हैं मनमोहन गुप्ता

मनमोहन गुप्ता का मानना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हमें सनातन का गौरव सिखाना चाहते हैं। इसी के लिए वह हमें अनेक माध्यमों द्वारा कनेक्ट करते हैं। इस कनेक्शन से जब भारतवासी आपस में जुडेंगे तो भारत भी जुड़ेगा। इस जुड़ाव से ही हमारे देश भारत के विश्व गुरु स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

फरीदाबाद। स्कूल के समय आरएसएस से जुड़ाव कॉलेज जाते जाते इतना बढ़ गया कि एबीवीपी के जरिए छात्र संघ की राजनीति में सक्रिय हो गए। आज वह बेशक एक उद्यमी हैं लेकिन इससे पहले वह आरएसएस के प्रचारक रहे हैं। प्रचारक मतलब देश धर्म के लिए गृह का त्याग करने वाला तपस्वी। तब उन्हें तत्कालीन प्रांत प्रचारक अशोक सिंघल, आज के राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के संयोजक इंद्रेशजी और तत्कालीन प्रचारक एवं आज के केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर का भी साथ मिला।

हम बात कर रहे हैं वैश्य जागृति फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष मनमोहन गुप्ता की। वह फरीदाबाद पैट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन के भी महासचिव हैं।

मूल रूप से दिल्ली निवासी मनमोहन गुप्ता की ननिहाल चांदनी चौक था, सो एक बेबाकी उनमें हैं। लेकिन संघ के बड़े नेता प्रेमजी गोयल के कहने पर वह 1987 में फरीदाबाद आए और यहीं के हो गए। एक बेटा एक बेटी के सुखद परिवार के संघ रहकर समाज की सेवा कर रहे हैं। वह अपने परिवार को अपना गौरव मानते हैं। कहते हैं कि संघ ने बहुत कुछ सिखाया, उसमें से थोड़ा समाज के लिए करने का प्रयास कर रहे हैं।

उनका मानना है कि हम तब प्रसन्न हो सकते हैं जब समाज में हम प्रसन्नता बांटेंगे। शायद यही कारण है कि मथुरा-आगरा हाइवे स्थित उनके पेट्रोल पंप शिवा मोटर्स पर जन्मदिन पर तेल भरवाने पर विशेष छूट दी जाती है, इसके साथ मतदान करने के बाद अंगुली पर स्याही दिखाने वाले को भी एक रुपये प्रति लीटर की छूट दी जाती है।

आज के समय में समाज को संभालने में मीडिया की बड़ी भूमिका मानते हैं। लेकिन इस भूमिका को संजीदगी से निभाने की भी अपील वह करते हैं। साथ ही कहते हैं कि सभी मिलकर चलेंगे तो भारत आगे बढ़ेगा।

जन आरोग्य की सेवा में राजकुमार अग्रवाल

सीमित साधनों के साथ प्रारम्भ हुए डॉ सूरज प्रकाश आरोग्य अस्पताल में आज प्रति महीने सात आठ हजार ओपीडी हो रही हैं और लक्ष्य 10 हजार तक ले जाने का है, जिसके पीछे राजकुमार अग्रवाल जैसे स्वयंसेवी, सेवाभावी किरदारों का बड़ा योगदान है।

फरीदाबाद। सामाजिक संस्था भारत विकास परिषद के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख राजकुमार अग्रवाल से जब आप मिलेंगे तो एक बार जरूर सोचेंगे कि आज के समय में कौन अपने जमे जमाए इलैक्ट्रिकल्स के धंधे को अपने बेटे को सौंपकर सेवा में लगता है। हम ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं कि आज के समय में पैसे का महत्व संबंधों पर भी भारी पड़ने लगा है। अग्रवाल सेवा सदन, इलैक्ट्रिकल्स डीलर्स एसोसिएशन, राजस्थान एसोसिएशन आदि अनेक प्रमुख संगठनों में भूमिकाएं निभाने वाले राजकुमार अग्रवाल अब फरीदाबाद के सेक्टर आठ में भारत विकास परिषद द्वारा बनाए डॉ सूरज प्रकाश आरोग्य अस्पताल में जनसेवा में जुटे हुए हैं। किसी मरीज का रजिस्ट्रेशन करवाते, एक्सरे या अल्ट्रासाउंड करवाते अग्रवाल के चेहरे पर कभी भी शिकन के भाव नहीं आते हैं।

राजकुमार बताते हैं कि इस अस्पताल का ध्येय पैसे कमाना बिल्कुल भी नहीं है। यहां सुविधाएं एक दम लैटेस्ट और किफायती हैं वहीं योग्य चिकित्सकों की देखरेख में लोग स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। राजकुमार अग्रवाल का कहना है कि उत्तम स्वास्थ्य हजारे नेमतों से अच्छा है। व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य का हर हाल में ख्याल रखना चाहिए क्योंकि जब आप स्वस्थ होंगे, तभी आप कुछ कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि डॉ सूरज प्रकाश आरोग्य अस्पताल में कैंसर इलाज की सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं वहीं कीमो बहुत किफायती दामों पर आधुनिक मशीनों पर किया जाता है। इसके अलावा यहां प्रदेश में सबसे सस्ती डायलासिस की सुविधा भी उपलब्ध है। अस्पताल का मकसद केवल अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक स्वास्थ्य सुविधा को पहुंचाना है।

बता दें कि भारत विकास परिषद ने इस प्रकार के 55 अस्पताल देशभर में निर्मित किए हैं। जिससे कि स्वस्थ भारत के सपने को पूरा किया जा सके। इसके अलावा परिषद देश भर में अनेक स्किल डेवलपमेंट सेंटर्स, स्कूलों में संस्कारशालाओं का संचालन करने के साथ साथ महिलाओं में तेजी से बढ़ रहे सर्विकल कैंसर की रोकथाम के लिए भी काम कर रही है।

कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि सेवा प्रमुख होने के कारण राजकुमार अग्रवाल देश भर में परिषद के कार्यों में संलग्न हैं। 1700 शाखाओं के जरिए एक लाख परिवारों से जुड़े भारत विकास परिषद के सेवा प्रमुख राजकुमार अग्रवाल से जब आप अगली बार मिलें तो मुस्कुरा कर कहिएगा, भगवान सब देख रहे हैं। आप लगे रहिए, चित्रगुप्त काम कर रहे हैं।

शिक्षा को उपयोगी बना रहे ऋषिपाल चौहान

फरीदाबाद। सेक्टर 21 स्थित जीवा पब्लिक स्कूल एक संस्कारशाला के रूप में तेजी से अपनी जगह बना रहा है। स्कूल के निदेशक ऋषिपाल चौहान बताते हैं कि भारत की आबोहवा में ही शिक्षा है। लेकिन हम विद्या की बात करते हैं। शिक्षा का अर्थ है कि पढ़ लिया और समझ लिया जबकि विद्या का अर्थ है समझने के बाद इसे जीवन में भी उतार लिया।

वह बताते हैं कि जीवा के शिक्षक वास्तव में आचार्य हैं जिसका अर्थ है कि जिसने आचरण में ले लिया। वह बताते हैं कि कुल 84 लाख योनियों में मनुष्य योनि का सामान्य ज्ञान सबसे कम है। गाय का बछड़ा पहले एक घंटे में सबकुछ सीख जाता है। वह अपने पैरों पर कुछ ही मिनट में खड़ा हो जाता है। वह बड़ा वृहद सामान्य ज्ञान रखता है। जबकि मनुष्य का बच्चा नकल करके सीखता है। मनुष्य किसी को अपना रोल मॉडल स्वीकार करता है। इन रोल मॉडल में माता, पिता, शिक्षक कोई भी हो सकता है।

इसके अलावा पिक्चर आदि से भी वह सीखता है। लेकिन पिछले 60 वर्षों में पिक्चरों में क्या दिखाया जा रहा है। यह हम देख ही रहे हैं। यहां इतना सब मिक्स हो गया है कि हम तय नहीं कर पा रहे हैं कि क्या सही है और क्या गलत है। हमारे सामने रोल मॉडल भी नहीं बन पा रहे हैं।

हमारी शिक्षा का केंद्र बच्चे के संपूर्ण मानवीय विकास का होना चाहिए जो कि फिलहाल कम ही देखने को मिलता है। हर बीज का अपना गुण होता है। वह बीज धरती को और मिट्टी बीज को पहचानती है। यही काम हम जीवा में करने का प्रयास कर रहे हैं। यहां आपके बच्चे के अनुसार उसकी आइडेंटिटी तरासने की कोशिश की जाती है। बच्चे को केवल मार्क्स के लिए नहीं पढ़ाया जाता है बल्कि उसे एक मानव बनना सिखाया जाता है। हमने दुनिया को 2600 वर्ष पहले सबकुछ दे दिया लेकिन आज हमारे पास क्या है। इस देश में वर्ष 1947 के बाद महान इंसान पैदा नहीं हुए क्योंकि इसके बाद हमने अंग्रेजों की नकल करनी शुरू कर दी।

लेकिन हम अंग्रेजी सिस्टम से बाहर निकल रहे हैं और अपने बच्चों को भी निकाल रहे हैं। यहां जीवा स्कूल में कोई बैल यानि घंटी नहीं बजती है और आपको कहीं कोई घड़ी नहीं मिलेगी। इसके बावजूद शिक्षक बच्चों को पढ़ाते हैं और सभी विषयों की क्लासें नियमित हो रही हैं। हमारे यहां साइकिल से आने वाले बच्चे हेलमेट लगाकर आते हैं। स्कूल में बच्चों को छोड़ने के लिए आने वाले पैरेंट्स भी हेलमेट के बिना नहीं आते हैं।

जीवा के स्टूडेंट स्वाध्याय करते हैं और एक दूसरे के स्वाध्याय पाठ की जांच करते हैं। हम उन्हें सेल्फ, अदर्स एवं एनवायरमेंट (एसओई) की प्रतिज्ञा दिलवाते हैं। जिसमें भारत के चरित्र निर्माण करने, समाज के बेहतर प्रबंधन, प्रकृति में खोज करने की सीख भी दी जाती है।

ऋषिपाल चौहान, संस्थापक-जीवा

हमारे बच्चे दिनचर्या को फॉलो करते हैं। वह सुबह, दोपहर और शाम को एक दी गई दिनचर्या को मानते हैं। इस दिनचर्या से बच्चे के व्यवहार के बारे में हम पता लगाते हैं और बच्चे के गुणों को और उभारने के लिए सही दिशा में शक्ति लगती है। जीवा के स्टूडेंट स्वाध्याय करते हैं और एक दूसरे के स्वाध्याय पाठ की जांच करते हैं। जीवा के बच्चे ट्यूशन नहीं जाते हैं। हम उन्हें सेल्फ, अदर्स एवं एनवायरमेंट (एसओई) की प्रतिज्ञा दिलवाते हैं। जिसमें भारत के चरित्र निर्माण करने, समाज के बेहतर प्रबंधन, प्रकृति में खोज करने की सीख भी दी जाती है।

वह बताते हैं कि भारत का विकास स्वज्ञान से होकर गुजरेगा। वहीं स्वराज का अर्थ है जहां आप स्वेच्छा से कार्य कर सकें। भारत की संस्कृति आत्मज्ञान का संदेश देती है जिससे आत्मदर्शन के रास्ते खुलते हैं। इस आत्मज्ञान के बाद स्वार्थ, लालच, ईर्ष्या आदि समाप्त हो जाते हैं।

ऋषिपाल चौहान अपने मंथली गोल अपनी जेब में रखते हैं। जिसमें सामाजिक व वाणिज्यिक लक्ष्य भी शामिल होते हैं। वह बताते हैं कि व्यक्ति में आठ प्रकार के गुण होते हैं वहीं शास्त्रों में व्यक्ति की नौ प्रकार प्रकृतियां बताई गई हैं। जिनको ध्यान में रखते हुए हमने एक ऐसा साफ्टवेयर विकसित किया है जिसके जरिए हम बच्चे की प्रकृति और उसकी पसंद नापसंद को समझ लेते हैं और उसी प्रकार से उनको विषयों के चुनाव करवाए जाते हैं। हम बच्चों को किताबी बातें नहीं पढ़ा रहे हैं बल्कि दक्षता एवं निपुणता प्रदान कर रहे हैं।

बच्चों के लिए एक 60 पेज का पोर्टफोलिया बनवाया गया है जिसके द्वारा बच्चे की सराउंडिंग, दोस्तों, हॉबीज, रोल मॉडल, स्पोर्ट्स, विषयों आदि की जानकारी ली जाती है। इसमें बच्चे की वात, पित्त व कफ के बारे में भी जानकारी एकत्रित की जाती है जिससे बच्चे के शरीर की प्रकृति के बारे में पता लगता है।

ऋषिपाल चौहान बताते हैं कि वर्ष 1994 में तीन बच्चों के साथ सेक्टर 19 में उन्होंने जीवा की नींव डाली थी। जो आज 1700 बच्चों के साथ वटवृक्ष बन चुका है। हमारी जानकारी के अनुसार जीवा जिले का एकमात्र स्कूल है जो आईसीएसई बोर्ड से मान्यता प्राप्त है। इस स्कूल में बच्चों में गुण रोपने के लिए एनवायरमेंट क्लब, एंटरप्रिन्योर क्लब, बैंक अकाउंट हैं वहीं उन्हें स्कूल परिसर में लगे औषधीय पौधों की भी जानकारी दी जाती है। यहां महीने में दो बार जीवाकुल होता है जिसका अर्थ है कि कोई भी व्यक्ति अपनी पसंद के विषय पर अपने विचार यहां प्रस्तुत करने के लिए स्वतंत्र होता है। यहां स्टूडेंट बाकायदा अपना लीडर चुनते हैं। यह प्रतिभागी सुबह की प्रेयर में अपना एजेंडा पेश करते हैं जिसके पक्ष अथवा विपक्ष में अन्य छात्र अपना वोट करते हैं।

वह कहते हैं कि डर से कानून लागू नहीं हो सकता है बल्कि एजुकेशन से होगा। इस शिक्षा में चरित्र निर्माण का भी समावेश होना बहुत जरूरी है। वह कहते हैं कि आज के परिप्रेक्ष्य में जीवा ऐसी व्यवस्था का निर्माण कर रहा है जहां पर शिक्षक अपने शिष्य को पहचान ले और उसकी प्रकृति के अनुसार उसे गढ़े। कुल मिलाकर कहें तो धर्म का पुनर्जागरण कर रहा है जीवा।

कैलाश सी ऊंची सेवा करने वाले ... कैलाश शर्मा

फरीदाबाद। नर में नारायण की पूजा करने वाले कैलाश शर्मा से मिलकर आपको अपनेपन का वो अहसास होगा, जिसके लिए जीवात्मा एक लोक से दूसरे लोक में विचरण कर रही है। जिसे हम आनन्द की प्राप्ति कहते हैं। कैलाश शर्मा अपने व्यवहार से आपको मोह लेंगे और इसके लिए कोई प्रयास भी करते वह आपको दिखाई नहीं देंगे।

अनेक संगठनों के साथ सक्रिय नजर आने वाले कैलाश शर्मा उद्यमी हैं और अपने काम के प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं लेकिन समाज के प्रति अपने लगाव और कुछ कर दिखाने की उनकी इच्छा ने जैसे उन्हें उस स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां आने के लिए लोगों ने वस्त्रों का सहारा लिया और साधू बन गए।

एक ओर लोग साधु बनकर आनन्द पाने की चेष्टा करते नजर आते हैं तो दूसरी ओर सामान्य रोजमर्रा के वस्त्रों में दिखने वाले कैलाश शर्मा बिना परिधान के भी संत हैं। उनके चेहरे का तेज बताता है कि अपने कार्य से वह बेहत संतुष्ट हैं लेकिन सेवा की ललक उनकी निरंतर बढ़ती जा रही है।

जब हमने उन्हें कुरेदने का प्रयास किया तो पता चला कि मूलरूप से मंडी आदमपुर राजस्थान के निवासी कैलाश शर्मा फरीदाबाद के सेक्टर 10 में बसे हैं। उनकी पढ़ाई लिखाई हनुमानगढ़ और जयपुर में हुई फिर नौकरी की और उसके बाद अपने वर्तमान स्टील के कारोबार में आए।

बताते हैं कि उनके ताऊजी बीरबल दत्त शास्त्री गायत्री के उपासक थे, सो बाल्यावस्था में बालक कैलाश के मन पर भी उनका गहरा प्रभाव पड़ा। ताऊजी करीब 40 साल तक हर साल दो महीने कल्पवास में बिताते और उनके अनुभवों का आस्वादन कैलाश शर्मा भी करते। उन्होंने अपनी इच्छा से अन्न त्यागकर इस शरीर की लीला को समेटा। ऐसी मिसाल आज के समय में कम ही देखने को मिलती है। लेकिन इस सब अनुभवों को कैलाश शर्मा ने अपने जीवन में बहुत अच्छे तरीके से उतारा।

कैलाश शर्मा मानते हैं कि हमारे जीवन में बहुत कुछ बदा हुआ प्राप्त होता है लेकिन बहुत कुछ करने की स्वतंत्रता भगवान ने हमें भी दी है। हम जो चाहे बन सकते हैं। लेकिन संतों की कृपा से सबकुछ सहज हो जाता है। उन्होंने वैकुंठवासी जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज से नामदान प्राप्त किया और कारसेवा का नया संकल्प भी उनके जीवन में स्वत: ही स्फुटित हो गया। कहते हैं कि बाबाजी से मिलकर मेरी सभी जिज्ञासाएं शांत हो गईं। उस दिन के बाद न उनसे कुछ पूछा, न किसी और से ही कुछ पूछने की जरूरत रही।

शहर फरीदाबाद के श्री सिद्धदाता आश्रम, राजस्थान एसोसिएशन, मानव सेवा समिति, भारत विकास परिषद संस्कार शाखा, खाटू श्याम मंदिर सेक्टर तीन, सालासर कैली धाम, रोटरी क्लब ऑफ फरीदाबाद एनआईटी, मारवाडी मंच, संत कबीर विद्यालय आदि अनेक संगठनों के जरिए वह जनसेवा के अपने व्रत को पूर्ण करने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें जयश्री बद्री विशाल सेवा ट्रस्ट द्वारा चलने वाली दैनिक रसोई तो मात्र दस रुपये में जरूरतमंदों को भोजन कराने का पुण्य अर्जित कर रही है।

ललक ऐसी है कि थकान से उनका दूर का नाता नहीं दिखाई देता है। चित्रकूट धाम में एक महीने तक चलने वाली 84 कोस की यात्रा में वह पिछले 17 साल से शामिल हो रहे हैं। वह यहां भगवान की कृपा से भंडारे का आयोजन भी करते हैं और संतों भक्तों का आशीर्वाद भी प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार 20 दिन चलने वाली अयोध्या धाम की 84 कोस की यात्रा भी दो साल से जारी है। इन यात्राओं में उन्हें चित्रकूट के संत गोबिन्ददास जी महाराज का सान्निध्य प्राप्त होता है जो एक दम सरल वैरागी संत हैं।

कहते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन में वो सब प्राप्त कर सकता है जो वह सोच सकता है। जो व्यक्ति सकारात्मक सोच रखेगा, वो सकारात्मक फलों की प्राप्ति करेगा और नकारात्मक व्यक्ति को नकारात्मक ही मिलेगा। शर्मा कहते हैं कि भगवान ने पहले ही कह दिया है कि कर्म करना तेरे हाथ में है उसके फल के बारे में तुझे चिन्ता नहीं करनी है। फल मैं दूंगा ही, इसमें कोई संशय मत कर। अब यह शायद भगवान का दिया फल ही है कि कैलाश शर्मा को अपने पुत्र और पौत्र के रूप में भगवान के दो बेहतरीन अंश प्राप्त हुए हैं। जो अध्यात्म के पथ पर उनके साथ ही चल रहे हैं और आगे समय में उनकी कहानी को आगे बढाते नजर आएंगे।

नगर निगम में हैट्रिक मारने वाले अकेले भाजपा पार्षद

अजय बैंसला

फरीदाबाद। नगर निगम फरीदाबाद इस शहर के निवासियों की लाइफलाइन है। कहते हैं कि व्यक्ति के जन्म से लेकर मरण तक नगर निगम की जरूरत पड़ती है। मतलब साफ है कि जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने का काम भी नगर निगम करता है। इसके साथ ही सड़क, सफाई की व्यवस्था भी नगर निगम का मुख्य कार्य है।

इसी नगर निगम को सुचारू चलाने के लिए जनता एक प्रक्रिया के तहत पार्षदों को चुनती है। वर्तमान में 46 सदस्यों वाले फरीदाबाद नगर निगम में एक पार्षद अजय बैंसला के नाम एक अनोखा रिकॉर्ड बन गया है। वह भाजपा के अकेले ऐसे पार्षद हैं जिन्हें पार्टी ने लगातार तीन बार सिंबल पर टिकट दी और वह तीनों बार जीतकर सदन में पहुंचे हैं।

खुद अजय बैंसला कहते हैं कि ऐसे पार्षद बहुत हैं जिनके घर में कोई न कोई पार्षद बनता आया है। वह किसी न किसी पार्टी अथवा निर्दलीय भी जीतकर आए हैं लेकिन ऐसे वह अकेले पार्षद हैं जो लगातार तीसरी बार खुद ही पार्टी के सिंबल पर जीतकर आए हैं।

फरीदाबाद के गांव एतमादपुर में जन्मे अजय बैंसला कानूनी विषयों के जानकार हैं। वह केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर के सिपाही कहलाते हैं। माना जाता है कि गुर्जर उन्हें अपने पुत्र के जैसे ही स्नेह करते हैं। अजय ने बताया कि वह बचपन में ही कृष्णपाल गुर्जर के साथ लग गए और उन्हें अपना राजनैतिक गुरु स्वीकार कर लिया। आज वह जो कुछ भी हैं, वह गुर्जर के कारण हैं। वर्ष 1996 में भाजपा युवा मोर्चा में शामिल हुए तो बाद में मंडल अध्यक्ष, जिला युवा मोर्चा अध्यक्ष और प्रदेश सह संयोजक लोकल बॉडी प्रकोष्ठ भी रहे। इस बार अपने वॉर्ड को कूड़ा मुक्त करना उनका मुख्य उद्देश्य है जिसके लिए वह जनता से भी समर्थन मांगते नजर आते हैं। इसके लिए वह जनता को जागरुक भी कर रहे हैं।

व्हाइट प्रिंट एक्सक्लूसिव

धर्मयोगी, कर्मयोगी, समाज योगी हैं

जिला शामली उत्तर प्रदेश में जन्म लेने वाले योगी तेजपाल सिंह वर्तमान में अखिल भारती योगी नाथ उपाध्याय समाज सेवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में समाज में एकता और जागरुकता के लिए कार्य कर रहे हैं। यह संगठन मुख्यतया उत्तर प्रदेश, हरियाणा सहित पूरे देश में सक्रिय है। जो कि योगी, नाथ, उपाध्याय समाज की बेहतरी के लिए स्थानीय प्रशासन से राज्यों की राजधानियों और केंद्र सरकार और केंद्रीय मंत्रालयों तक के साथ निरंतर संपर्क कर अपने मुद्‌दों को रख रहा है।

उन्हें योगी आदित्यनाथ द्वारा संस्थापित विश्व हिन्दू महासंघ भारत का भी राष्ट्रीय संगठन महामंत्री का दायित्व प्राप्त है।

कृषक पिता कर्ण सिंह को जिंदगी के साथ जद्दोजहद करते नजदीक से देखा और जरूरतों को पूरा करने के लिए दिल्ली की ओर रुख किया। कभी काम को छोटा या बड़े की नजर से नहीं देखने वाले योगी ने थोड़े ही समय में वह सब प्राप्त किया जिसने उनके पिता की आंखों में संतोष के भाव ला दिए। पिता से प्राप्त संस्कारों के साथ समाज की सेवा के लिए काम कर रहे योगी बताते हैं कि पिताजी कहते थे कि किसान बोता है तो पूरा संसार खाता है लेकिन वो यह भी कहते थे कि समाज में कोई भी छोटा बड़ा अथवा व्यर्थ नहीं है। सभी का एक स्थान और उपयोगिता है जिसकी हम पहचान कर सभी को समान अवसर प्रदान कर सकते हैं।

गांव रसूलपुर गूजरान और बाद में शामली के राजकीय किसान इंटर कॉलेज, राष्ट्रीय किसान डिग्री कॉलेज और वीवी कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करने वाले योगी बचपन से ही सीखने की प्रवृत्ति वाले व्यक्ति हैं।

उन्होंने दिल्ली में हैंडमेड पेपर बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार का जरिया बनाया और खादी ग्रामोद्योग

योगी तेजपाल सिंह

से जुड़ गए। लेकिन इसके बाद वह दिल्ली में कस्टम विभाग के पेस्ट एंड कंट्रोल विभाग में नौकरी पर लग गए। लेकिन आगे बढ़ने की ललक के कारण उन्होंने थोड़े ही समय में अपनी फर्म बनाकर कस्टम विभाग में ही क्लियरेंस का काम शुरू कर दिया जिससे परिवार में थोड़ी संपन्नता आई और लोगों ने उनकी मेहनत और जज्बे को स्थान देना शुरू किया।

हालांकि कुछ लोग कहते थे कि सरकारी नौकरी छोड़कर काम करना कोई अच्छा निर्णय नहीं है लेकिन उन्हें खुद पर विश्वास था कि वह यह कर सकेंगे और उन्होंने कर दिखाया।

अपने व्यापार को और मजबूती देने के लिए उन्होंने जी-कार्ड की परीक्षा पास की। जो कि काफी कठिन परीक्षा मानी जाती है। इसके बाद कभी व्यापार में पीछे मुड़कर नहीं देखा।

योगी तेजपाल सिंह को धार्मिक सामाजिक कार्यों में जाने की रुचि प्रारंभ से ही थी। अत: जब वह सेक्टर 28 फरीदाबाद में रहने के लिए आए तो घर के सामने ही विश्व हिन्दू परिषद के मंदिर श्री रघुनाथ मंदिर की गतिविधियों में भागीदारी प्रारंभ की। मंदिर ने उन्हें अपनी कमेटी में शामिल कर लिया। इसके बाद वह सेक्टर 28 रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष बनकर जनसेवा में लग गए।

वह सनातन हिंदू वाहिनी हरियाणा के भी अध्यक्ष हैं। वह समाज के उत्थान के लिए अनेक धरने, प्रदर्शन, सेमिनार, बैठकों और रैलियों का आयोजन कर चुके हैं। इनमें दिल्ली के जंतर मंतर पर घुमंतु जातियों को अनुसूचित जाति जनजाति वर्ग में लाने के लिए किया

विशाल प्रदर्शन, फतेहाबाद, सोनीपत और मुजफ्फरनगर में आयोजित नाथ, योगी, उपाध्याय समाज के बड़े समारोह प्रमख रूप से उल्लेखनीय हैं।

योगी तेजपाल सिंह के निरंतर प्रयास एवं समाज के सहयोग से अनेक जगहों पर आश्रम एवं धर्मशालाओं का निर्माण किया गया है। इनमें शाहदरा दिल्ली में चार मंजिला इमारत में नाथ योगी उपाध्याय समाज के मेधावी बच्चे रहकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। उन्हें भोजन भी निशुल्क दिया जाता है।

इसके साथ बडौत और शुक्रताल, मुजफ्फरनगर में भी धर्मशालाओं का संचालन किया जा रहा है।

उनका स्पष्ट मत है कि शिक्षा और राजनैतिक शक्ति के बिना कोई भी समाज अपने पिछड़ेपन को दूर नहीं कर सकता है। इसलिए वह समाज को राजनैतिक ताकत प्राप्त करने और शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए हमेशा प्रेरित करते हैं। वह कहते हैं कि सत्ता से सेवा की सीढ़ी चढ़ना सरल हो जाता है क्योंकि तब आपकी बात को प्रशासन अधिक ध्यान से सुनता है और करने के लिए बाध्य भी होता है।

वह भाजपा के बारे में कहते हैं कि हमारा सौभाग्य है कि हमने पिछले चुनाव में खुलकर एक ऐसे राजनैतिक दल का सहयोग किया है जिसके हृदय में राष्ट्रवाद और समरसता समाई हुई है। हमें पता है कि यह संगठन हमें कभी भी पथभ्रष्ट नहीं होने देगा और हम समाज के उत्थान के संकल्पित कार्य कर सकेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में कहते हैं कि हमें पता है कि आज भारत देश की नाव की पतवार एक अच्छे नाविक के हाथ है। हम भी इसके सहयोगी बनना चाहते हैं। मैं अपने समाज के उत्थान से देश के उत्थान की ओर निरंतर बढ़ना चाहता हूं। मैं तिनका भर सहयोग भी यदि राष्ट्र निर्माण के लिए कर सका तो अपने जीवन को फलीभूत समझूंगा। समाज को समय देने के लिए वह सप्ताह के पांच दिन ही कारोबार करते हैं और दो दिन समाज के लिए पूरी तरह से समर्पित रहते हैं। अन्य दिनों में भी जरूरत पड़ने पर समाज को प्राथमिकता देते हैं।

सुप्रीम कोर्ट में न्याय की आवाज बने विकास वर्मा

फरीदाबाद। संवाद से विवाद समाप्त होता है। यह कहना है सुप्रीम कोर्ट में वकालत करने वाले विकास वर्मा का। एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड की कठिन परीक्षा पास करने वाले विकास वर्मा हरियाणा सरकार में अतिरिक्त अटॉर्नी जनरल भी रहे हैं। बहुत कम उम्र में उनकी योग्यता और अवसर साथ साथ चल रहे हैं। ऐसे में किसी को उनसे रंज होता हो तो होता रहे।

विकास वर्मा कहते हैं कि चलता है हाथी उड़ती है धूल, मेहनत से ही खिलते हैं फूल। वर्ष 2015 से सुप्रीम कोर्ट में वकालत कर रहे विकास का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट में दाखिल होने वाली याचिकाओं को दाखिल होने लायक बनाना भी बड़ा टास्क है। इसके लिए कोर्ट ने कुछ नियमावली बनाई हैं। जिनको पूरा करने के लिए एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड को मानक मान लिया गया है। मैंने इसीलिए यह परीक्षा पास की जिससे कि सुप्रीम कोर्ट में दाखिल होने वाली याचिकाओं को दाखिल होने लायक बनाने की क्षमता मुझमें आ जाए। उनका कहना है कि इस परीक्षा को पास करना आसान काम नहीं है। सच्चाई यह है कि इतनी पढ़ाई यदि कोई कर ले तो वह मजिस्ट्रेट की परीक्षा भी पास कर सकता है।

विकास वर्मा ने अपनी प्रैक्टिस की शुरुआत फरीदाबाद जिला अदालत से ही अपने चाचा आरपी वर्मा के साथ शुरू की। उन्होंने विकास की क्षमताओं को खूब मांझा। वर्ष 2011 में हरियाणा की हुड्डा सरकार में उन्हें एएजी बनने का अवसर मिला तो उनकी क्षमताओं में और बढ़ोतरी हुई।

विकास का मानना है कि हमारी अदालतों में मीडिएशन पर बहुत कम काम होता है जबकि बाहर की अदालतों में मध्यस्थता के जरिए बड़ी संख्या में मामले निपटाए जाते हैं। मेरा मानना है कि हमारी अदालतों को भी इस ओर कदम बढ़ाने चाहिए। इससे अदालतों पर मुकदमों का दबाव घटेगा और मामलों को सुलझाने में लगने वाली समय सीमा को भी घटाया जा सकेगा। कहते हैं कि देरी से मिला न्याय भी अन्याय से कम नहीं होता है। यदि इस ओर सोचकर अदालतें काम करेंगी तो मजा आ जाएगा। उनका मानना है कि अदालतों में फैसले करने की समयसीमा तय होना बहुत जरूरी है।

व्हाइट प्रिंट

दमदमा के राजेश खटाना एडवोकेट में दम बहुत है

फरीदाबाद। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की लीगल सैल के राष्ट्रीय सह संयोजक एडवोकेट राजेश खटाना को गरीबों का हमदर्द माना जाता है। वह गरीबों और कम उम्र बच्चों के साथ हुए अपराधों के मुकदमे निशुल्क लड़ते हैं। ऐसे अनेक मुकदमे उन्होंने लड़े जिनसे उनकी इस छवि को मजबूती मिली है।

ऐसा ही एक मामला चार साल की बच्ची के साथ हुई दरिंदगी के बाद सामने आया। जिसमें खुद राजेश खटाना ने आगे बढ़कर पीड़ित का हाथ पकड़ा और उसे न्याय दिलाया। आरोपी को फांसी सजा दिलवाई और पीड़िता को सहायता राशि भी दिलवाई। इसी प्रकार के एक मामले में एक महिला को उसके रिश्तेदारों द्वारा जर्मनी ले जाकर छोड़ दिया गया, उसके पासपोर्ट आदि नष्ट कर दिए गए। जिसकी पुकार सुनकर राजेश खटाना ने जर्मनी और भारतीय दूतावासों के साथ सम्पर्क साधा और महिला की घर वापसी सुनिश्चित की।

मूलरूप से गुरुग्राम के दमदमा के रहने वाले राजेश खटाना ने छात्र राजनीति भी जमकर की। वह एनएसयूआई के प्रदेश सचिव, जिला फरीदाबाद अध्यक्ष रहे। उनकी क्षमताओं को जानकर कांग्रेस नेतृत्व ने उन्हें चाइल्ड लेबर एडवाइजरी बोर्ड का सदस्य, टेलिफोन सलाहकार समिति का सदस्य, ग्रीवेंस कमेटी का सदस्य बनाया।

उन्होंने भी लॉयर्स सोशल जस्टिस फोरम के जरिए गरीब गुरबा तक न्याय पहुंचाने का काम कर रहे हैं। यह संस्था नए वकीलों को भी प्रोत्साहित करने का काम करती है। जिसमें एलएलबी की परीक्षा पास कर आने वाले छात्रों को बड़े अधिकारियों की मौजूदगी में रिबन बांध कर उन्हें जनता को न्याय दिलाने की शपथ दिलवाते हैं।

खटाना कहते हैं कि हमारे जीवन में जो भी होता है, वो पहले से तय है लेकिन हमें अच्छा करने की आजादी है। हम वो कर सकते हैं जो हम सोच सकते हैं। सारा खेल ही सोच का है। मैं सोचता हूं कि आज भी भारत की अदालतों में न्याय पाना महंगा काम है। मैं ज्यादा कुछ नहीं कर सकता लेकिन गरीब गुरबा को न्याय पाने में मदद कर सकता हूं। कौन जानता है कि किसकी दुआ किस रूप में सामने आ जाएगी।

शुभसमय
वैदिक फाउंडेशन (रजि.)

हमारे जीवन में सुख, शांति एवं समृद्धि के लिए हमें ध्यान, यज्ञ और प्रकृति संरक्षण करना चाहिए। ऐसा कर हम स्वयं के साथ साथ लोककल्याण का कार्य भी कर सकेंगे.

शुभसमय वैदिक फाउंडेशन की स्थापना वर्ष 11 फरवरी 2020 को भारतीय संस्कृति, ज्ञान एवं विज्ञान की पताका फहराने के उद्देश्य से की गई है।

फाउंडेशन का मानना है कि जो व्यक्ति स्वयं का अर्थ जानता है वही दूसरे को सम्मान दे सकता है। इसके लिए पहले स्वयं को सही अर्थों में साधना और फिर दूसरों का भी ख्याल रखना हमारा ध्येय है।

फाउंडेशन यज्ञ, योग और पर्यावरण के क्षेत्र में प्रमुख रूप से कार्य कर रहा है। इसके लिए हमने यज्ञशालाओं का निर्माण एवं संचालन, योग केंद्र की स्थापना एवं संचालन और पौधरोपण के कार्यों को साधा है।

हम योग शिविरों द्वारा लोगों को लाभ पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं, वहीं एक दिया सुबह शाम के नारे के साथ लोगों को प्रकृति को धन्यवाद करने का उपक्रम भी स्थापित किया है। बड़ी संख्या में लोगों ने दो समय गौ घृत का दिया जलाना प्रारंभ किया है। इसके लिए हमने भी घृत की बत्तियों के पैकेट तैयार किए हैं, जो मांगे जाने पर उपलब्ध करवाए जाते हैं।

इस पुनीत कार्य में आप सभी का सहयोग चाहिए। यह आपकी मानवता के प्रति आहूति होगी, धन्यवाद्।

शकुन रघुवंशी, संस्थापक अध्यक्ष

अब मानव को मानव बनाने का समय आ गया है.

संस्कारशाला

बचपन से संस्कार की डोज

विद्यासागर इंटरनेशनल स्कूल, घरौड़ा में निर्मित संस्कारशाला (9 अप्रैल, 2021 से प्रारंभ)

बच्चे न केवल हमारे भविष्य का उद्यम होते हैं बल्कि वह समाज और राष्ट्र का भी प्रतिबिम्ब होते हैं। हमने जैसा भी जीवन जीया हो, लेकिन अपने बच्चों को अच्छा जीवन देना चाहते हैं। हम उन्हें अच्छे संस्कार देना चाहते हैं।

हमने निजी स्कूल संचालकों को अपने प्रोजेक्ट के बारे में बताया जिसमें प्रतिदिन हवन के साथ छात्रों के जन्मदिन मनाने का विचार उन्हें बहुत पसंद आया। आज दो यज्ञशालाएं अलग अलग स्कूलों में संचालित हो रही हैं।

फौगाट स्कूल, राजीव कॉलोनी, सै-56 में निर्मित यज्ञशाला (3 फरवरी, 2020 से प्रारंभ)

स्कूलों में यज्ञशालाएं संचालित करने का मनोभाव यही है कि हम बालपन से ही बच्चों को अपने देश भारत के ज्ञान एवं विज्ञान के साथ परिचय करवाना चाहते हैं। जिससे कि आज के कलुषित वातावरण और वैश्विक असमाजिक मीडिया माध्यम उन्हें इस देश के बारे में कोई अनर्गल ज्ञान न दे सकें। यदि ऐसा हो भी तो वह इसका जवाब दे सकें। हम उन बच्चों को हवन के साथ साथ भारतीय ज्ञान परंपरा के बारे में भी परिचित करवाते हैं। बच्चों द्वारा दी गई आहूति से न केवल वातावरण शुद्ध होता है बल्कि अशुभ बैक्टीरिया भी समाप्त होता है। वह अपने परिवार और दोस्तों में इसकी चर्चा करते हैं। जिसके नियमित अभ्यास से वह भारतीय संस्कृति के दूत बन रहे हैं। आप भी इस प्रयोजन में हमारा सहयोग कर इस कड़ी को और आगे बढ़ा सकते हैं। हमें आपका इंतजार रहेगा।

बचपन के संस्कार जिंदगी भर साथ निभाते हैं.

यज्ञ-उपवन

स्वहित से परहित की ओर

हम प्रकृति पुरुष परमात्मा से जीवन भर लेते हैं लेकिन क्या कभी सोचा है कि केवल लेते रहने से कुबेर के खजाने भी खाली हो जाते हैं। हमें प्रकृति से प्राप्त बेशकीमती प्राणवायु, ऊष्मा और भावना को वापिस भी करना चाहिए। जिससे कि वह किसी अन्य के काम आ सके।

यज्ञ-उपवन में विभिन्न प्रकार के औषधीय घटक प्रदान करने वाले पेड लगाकर जनसाधारण को इन्हें अपने जीवन में स्थान देने के लिए प्रेरित करेंगे। प्रकृति के साथ उनका संबंध जोड़ने के लिए एक बांस द्वारा निर्मित वैदिक यज्ञशाला बनाई जाएगी। जहां प्रतिदिन हवन होगा और व्यक्ति अपने जन्मदिन, सालगिरह पर यहां आहूति डाल सकेंगे। वैज्ञानिक सत्य है कि गौ घृत से होने वाले हवन में भारी मात्रा में ऑक्सीजन उत्पन्न होती है। जिससे सर्वसमाज को स्वच्छ प्राणवायु प्राप्त होगी। इस प्रकार यज्ञ-उपवन का प्रमुख उद्देश्य सर्वसमाज में लोककल्याण के लिए मानस तैयार करना है। इस प्रकार हम प्रकृति का संरक्षण, जनकल्याण और संस्कार तीनों ही आयामों को एक ही स्थान पर प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

प्रकृति से बहुत कुछ लिया, अब देने की बारी है.

योग केन्द्र

ध्यान विज्ञान से शांति का ज्ञान

जीवन में हर व्यक्ति सुख एवं शांति की कामना करता है, समृद्धि के लिए प्रयास करता है। लेकिन समृद्धि प्राप्त करने के बाद भी वह शांति और प्रसन्नता का अनुभव नहीं कर पाता है। इसका एक प्रमुख कारण हमारे मन के अंदर चलने वाले असंख्य विचारों का बवंडर ही होता है। इस बवंडर को शांत करने के लिए हम ध्यान को प्रमुख रूप से अपने जीवन में स्थान दे सकते हैं। यह तथ्य है कि केवल 15 मिनट का ध्यान पूरे दिन के लिए आपके मन को शांति प्रदान करने में पूर्णतया सक्षम होता है।

आजकल प्रचलन में आ रही ध्यान विधियों के स्थान पर हमने आदिशिव के योग को ही जन जन तक पहुंचाने का प्रयोजन किया है। आदिशिव ने माता आध्याशक्ति को इन विधियों के बारे में बड़े विस्तार से समझाया है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने यह ज्ञान सर्वप्रथम सप्तऋषियों को प्रदान किया, जिनके द्वारा यह कालांतर में सम्पूर्ण विश्व को प्राप्त हुआ। हम आदिशिव की इस करुणा को सभी तक पहुंचाने के लिए प्रयास उन्हीं की कृपा से कर रहे हैं।

शुभसमय वैदिक फाउंडेशन (रजि.)

5 बी 1, एनआईटी, फरीदाबाद-121001, हरियाणा (भारत)
दूरभाष: 0129-4880552, 7217670411

Email: shubhsamay99@gmail.com

IAmShakun   ShubhSamay   ShubhSamay.in

शांत मस्तिष्क में ही उत्तम विचार जन्म लेते हैं.

श्री खाटू श्याम हमारे कुलदेवता : अजय गौड़

फरीदाबाद। हरियाणा के मुख्यमंत्री के पूर्व राजनैतिक सलाहकार अजय गौड की एक पहचान खाटू भक्त के रूप में भी होती है। उनके द्वारा आयोजित किए जाने वाले खाटू कीर्तनों में हजारों की संख्या में लोग जुटते हैं लेकिन श्री खाटू श्याम के प्रति गौड की दीवानगी का कारण क्या है। वास्तव में श्री खाटू श्याम जनसेवक अजय गौड के कुलदेवता हैं।

जाने माने वकील सीपी गौड ने अपने बेटे अजय गौड को भी वकालत की डिग्री कराई लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था। अजय गौड को समाज की सेवा में आनन्द आता था। पहले आरएसएस से जुड़े और फिर भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता हो गए। भाजपा के लगातार दो बार जिलाध्यक्ष भी बने। उनके सांगठनिक कौशल की प्रशंसा चहुंओर है।

उनका मानना है कि हर व्यक्ति को आध्यात्मिक होना ही चाहिए। यह अध्यात्म ही है जो मनुष्य को पशुओं से अलग करता है। अध्यात्म मनुष्य को संयमित बनाता है। जिससे व्यक्ति का आत्मबल बढ़ता है। वह खुद भी प्रतिदिन भगवान की आराधना करते हैं लेकिन उनका अध्यात्म कर्मकांड से अलग और आत्मिक ज्यादा है।

आजकल परिवारों में घटित होने वाले अपराधों पर उनका स्पष्ट विचार है कि हमने अपने निजी एवं क्षणिक हितों के लिए के एकल परिवारों की ओर कदम बढ़ाए जिसके कारण आज कोई किसी को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है। लेकिन यह गलत हो रहा है। इससे एक दिन मानवीय सभ्यता को बड़ा धक्का लगना स्वाभाविक है। हमें समय रहते अपने कुटुंबों में लौटना होगा। जहां चार में एक कमजोर भी होगा तो बाकी के तीन संभाल लेंगे। किन्हीं दो लोगों में मनमुटाव होगा तो बाकी के समझा लेंगे।

वह मानते हैं कि इस समस्या की दवा साधुओं के पास है लेकिन हमें साधु का चुनाव भी सोच समझकर करना होगा। इसके लिए अधिकांश परंपरा के साधु अधिक मददगार हो सकते हैं। आप उनके समीप पहुंचने से पहले उनके बारे में खूब जांच पड़ताल कर लें। हालांकि सद्गुरु हमेशा हमारे जीवन में घटित होंगे, उनका चुनाव तो स्वयं भगवान ही करते हैं।

उनसे पूछा गया कि आप श्री खाटू श्याम के बड़े आयोजन करवाते हैं। आपको लोग जनसेवक तो कहते ही हैं लेकिन खाटू भक्त के रूप में भी पहचानते हैं। उन्होंने बताया कि वास्तव में श्री खाटू श्याम हमारे कुलदेवता हैं। हम तो उनकी आराधना से खुद को अलग नहीं कर सकते हैं। फिर वह हारे के सहारे भी हैं। उनकी अंगुली पकड़ने वाले की कभी हार नहीं होती है।

अजय गौड का मत है कि आज हमें हमारी शिक्षा प्रणाली में, अपने पोषित होने वाले संस्कारों पर ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि हमारा, भारत का भविष्य हमारे बच्चे हैं। हालांकि वह यह भी मानते हैं कि युवाओं का रुझान अध्यात्म की ओर बढ़ रहा है, फिर भी उनको संभालने में समय लगाना होगा।

परफेक्ट है जी!

उद्यमी हरविंद कुमार बत्रा

फरीदाबाद। 300 करोड़ रुपये टर्नओवर वाली परफेक्ट ब्रेड कंपनी के मालिक हरविंद कुमार बत्रा (एचके बत्रा) की उपस्थिति तो आपको उनकी समृद्धि की कहानी कहेगी लेकिन उनका व्यवहार आपके मन के मयूर को चुरा लेगा। इतनी सहजता कहां से लाते हो, पूछने पर कहे हैं कि मैं ऐसा नहीं मानता कि सहजता कहीं से लानी होती है। यह तो हमें हमारे माता पिता से मिलने वाला गुण है।

देश के बंटवारे का दंश झेलने के बावजूद अपने बच्चों में संस्कारों को बचाए रखने वाला बत्रा परिवार किसी के लिए भी आदर्श हो सकता है। बत्रा बताते हैं कि उनके परिवार ने एक ही मंत्र दिया कि जमकर पढ़ो, जमकर कमाओ क्योंकि शिक्षा और पैसा ही इंसान को समाज में रुतबा दिला सकता है। दिल्ली के प्रख्यात रामजस कॉलेज से बीकॉम ऑनर्स करने वाले एचके बत्रा 1993 में फरीदाबाद आए। उन्होंने हथीन में ब्रेड बनाने वाली एक बीमार कंपनी खरीदी और थोड़े समय में ही अपनी पुख्ता पहचान बना ली। उन्होंने बताया कि वह कुछ भी करते लेकिन किसी चीज से समझौते में विश्वास नहीं रखते हैं। इसीलिए उन्होंने एक ऐसी ब्रेड कंपनी बनाने का निर्णय किया जिसमें परफेक्ट चीज बनाई जाए। इसके लिए जरूरी था कि वह क्वालिटी से समझौता नहीं करें। बत्रा बताते हैं कि एक समय में बड़ी ब्रेड कंपनियां हमें मिटाने पर तुली थीं, फिर दौर आया जब वो हमसे अपना माल बनवाना चाहती थीं, फिर वो दौर आया कि वो कंपनियां बंद हो गईं और हम बाजार में अपनी क्वालिटी के दम पर बरकरार हैं और आगे बढ़ रहे हैं।

बत्रा जब बताते हैं कि वह उत्तर भारत के छह राज्यों में कारोबार कर रहे हैं और चार राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके हैं तो उनके चेहरे पर संतोष के भाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। बत्रा को देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री द्वारा भी सम्मान प्राप्त हो चुका है।

बाजार में उनकी रेपुटेशन ही है कि वह ऑल इंडिया ब्रेड मैन्युफेक्चरर्स एसोसिएशन के पिछले आठ साल से अध्यक्ष हैं। इसके साथ ही फरीदाबाद के उद्योगों के प्रमुख संगठन फरीदाबाद चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के भी आठ साल से अध्यक्ष हैं। एचके बत्रा का परफेक्ट ब्रेड भारतीय रेलवे, डिफेंस को भी जाता है।

बत्रा के व्यक्तित्व के अन्य आयाम भी हैं। वह पिछले 35 साल से निरंतर दोनों नवरात्र में माता की चौकियों का आयोजन करते हैं जिनमें शामिल होने वालों के चेहरे बत्रा के संबंधों का बखान करते हैं। दिल्ली के प्रसिद्ध छतरपुर मंदिर के ट्रस्टी के रूप में भी आप उन्हें जान सकते हैं और फरीदाबाद के समन्वय मंदिर से भी उनका नाम जोड़ा जाता है। उनके घर पर वर्षों से माता की अखंड ज्योति जल रही है। जिसे वह माता पिता का आशीर्वाद ही बताते हैं। उन्हें थैलासीमिया बच्चों की खुशियों में शामिल होते आम देखा जाता है। आप उन्हें हमेशा शहर की भलाई के कार्यों में साथ खड़ा देखेंगे। यह दरियादिली परफेक्ट है जी!

नीचे चित्र में थैलासीमिया ग्रस्त बच्चों की खुशी में शरीक होते उद्यमी एच के बत्रा।

मैं भारत हूं... बल्लभगढ़ वाला शिक्षाविद

फरीदाबाद। शिक्षाविद से राजनीति में आए भारत भूषण की बल्लभगढ़ क्षेत्र में अपनी अलग पहचान है। एक शिक्षाविद, एक राजनैतिक कार्यकर्ता और समाजसेवी के रूप में उनके चाहने वालों की संख्या हजारों में है। भारतीय जनता पार्टी की राजनीति करने वाले भारत भूषण का पिछले विधानसभा चुनावों में मैं भारत हूं का डॉयलॉग बहुत प्रसिद्ध हुआ। लोग उन्हें भारत कुमार भी कहने लगे लेकिन उन्होंने लोगों से प्रार्थना की कि वह उनके बेटे और भाई हैं और उन्हें इसी रूप में जाना जाए।

हालांकि उनकी एक सशक्त पहचान शिक्षाविद के रूप में भी है। जिसकी शुरुआत उन्होंने वर्ष 2002 में अपने पिता की प्रेरणा से कुंदन ग्रीन वैली स्कूल की स्थापना से की। तब प्री नर्सरी और फर्स्ट क्लास में बच्चों को प्रवेश दिया गया जो आगे बढ़ते बढ़ते 12वीं तक आ पहुंचे हैं। हम हमारे ही पौधों को सींचकर आगे ले जा रहे हैं। यही कारण है कि हमें बाहर से एडमिशन की जरूरत नहीं पड़ी। हमारे यहां 11वीं व 12वीं में मेडिकल व नॉन मेडिकल सहित कॉमर्स व आर्ट्स सभी विषय बच्चों को पढ़ाए जा रहे हैं। इसी की एक ब्रांच उन्होंने ग्रेटर फरीदाबाद में कुंदन ग्लोबल स्कूल के रूप में की है जो लोगों के बीच अपना विश्वास जमा चुका है।

इस काम में उनके रिटायर्ड वाइस प्रिंसिपल पिता ने भी अपना आशीर्वाद दिया। हालांकि समाजसेवा में मास्टर और कानून में ग्रेजुएशन की डिग्री के साथ वह एक ऐसा कॉम्बिनेशन हैं जिन्हें शायद ही जिंदगी के किसी मोड पर सोचना पड़ेगा। आत्मविश्वास से भरे और योग्यता से नित नए सोपान रचते भारत भूषण क्षेत्र की जनता की पीड़ा से व्यथित हो जाते हैं। यही कारण है कि उनके अपने स्कूलों में जरूरतमंदों के बच्चे बड़ी संख्या में निशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हालांकि योग्य बच्चों का भी वह हाथ पकड़ लेते हैं और उन्हें हीरो बनाने के बाद ही छोड़ते हैं। इनमें एक बड़ा नाम ओलम्पियन मनीष नरवाल है। जिसने पैरा ओलम्पिक की निशानेबाजी प्रतियोगिता में गोल्ड जीतकर देश का नाम रोशन किया, वह भारत भूषण के कुंदन ग्रीनवैली स्कूल का ही छात्र था।

भारत भूषण का मानना है कि मनोवैज्ञानिक रूप से एक स्टूडेंट अपने टीचर को फॉलो करता है। ऐसे में अध्यापकों पर बड़ी जिम्मेदारी है। इसीलिए मैं कहता हूं कि टीचिंग बाई चांस नहीं बल्कि बाई चॉइस चुनना चाहिए।

मैं तो शनिदेव की कृपा में जीता हूं भाई

समाजसेवी लॉयन आरपी हंस

आर पी हंस का मानना है कि जिंदगी जितने भी दिन की हो, लेकिन विचार अच्छे होने चाहिए।

उम्रदराज से दिखने वाले सूटेड बूटेड एक व्यक्ति को कुत्ते को दूध पिलाते देख आप भी थोड़ा ठिठक सकते हैं। आपको एकबारगी लगेगा कि क्या दकियानूसी बात है, लगता है कि इनको किसी ज्योतिषी ने बताया होगा। लेकिन आप जब इनसे मिलोगे तो लगेगा कि इन्हें कोई ज्योतिषी क्या कोई भी पागल नहीं बना सकता है क्योंकि यह तो पूरी तरह से शनिदेव की भक्ति में भीगे हुए हैं। वह कहते हैं कि मुझ पर तो शनिदेव की पूरी कृपा है भाई। मुझे तो उनके अलावा कुछ भी नजर नहीं आता है। रही बात कुत्ते को दूध पिलाने की तो यह मेरा मानव होने का सबूत है। हम मानवों को सभी जीवों पर दया करनी है। अन्य जीव तो इस मामया में एक दूसरे को मारकर ही जीवन जीते हैं लेकिन मानव के साथ ऐसा नहीं है।

आज के पाकिस्तान में स्थित डेरा गाजीखान से बंटवारे के बाद आए परिजनों ने फरीदाबाद में डेरा डाला। उनका बचपन यहीं बीता और यहीं नौकरियां कीं। रिटायरमेंट की उम्र को भी पार कर चुके हैं लेकिन उनकी दवा निर्माता कंपनी उन्हें काम से नहीं छोड़ रही है, सो काम कर रहे हैं।

लॉयन क्लब ऑफ फरीदाबाद कियान के प्रेसीडेंट हैं और लोक उत्थान क्लब के जरिए भी वह समाज की सेवा का काम कर रहे हैं। एक समय पूर्व जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड और मैंटीनेंस ट्रिब्यूनल के सदस्य रहते भी उन्होंने बहुतों को न्याय पाने में मदद की। इधर लोगों में अपनेपन की कमी आने की शिकायत तो उन्हें हैं। इसके अलावा वह किसी के प्रति शिकायती नहीं रहते हैं। उनका कार्यालय प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्रियों से प्राप्त सम्मान पत्रों से अटा हुआ है लेकिन उनमें किसी बात का अहंकार नहीं है। उनका मानना है कि बहु को बेटी मानें और बहु सास को मां माने तो घरों में से कलह खत्म हो सकती है।

भोजन खाने और प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए बहुत जरूरी है कि हमारे जबड़े में दांत हों

डॉ. पुनीता दुग्गल आहूजा

फरीदाबाद। 90 साल उम्र के एक अंकल हमारे आरबीए डेंटल केयर आए। उनके अधिकांश दांत गिर चुके थे और बचे हुए दांत खराब हो गए थे। जिससे उनको अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने अपनी समस्याओं का हल हमसे मांगा, जिस पर हमने अपना प्रयास किया और उसके बाद अंकल की खुशी देखते ही बनती थी। उनका पूरा व्यक्तित्व बदल चुका था। उनके चेहरे पर खुशी चमक रही थी। ऐसी प्रसन्नता को देखकर हम भी अपने जीवन की सबसे बड़ी खुशी का अहसास कर रहे थे।

डॉ पुनीता दुग्गल आहूजा

यह बात सेक्टर 15 स्थित आरबीए डेंटल केयर का संचालन करने वाली डॉ पुनीता दुग्गल आहूजा ने हमें बताई। वह कहती हैं कि हमारे जीवन में जितना जरूरी प्रसन्नता है, उतना ही जरूरी है हमारा जबड़ा क्योंकि हम भारत के लोग जब खुश होते हैं तो खाते हैं और खाने के लिए हमें सबसे ज्यादा दांतों की जरूरत होती है। डॉ पुनीता ने बताया कि दांतों के गिरने के लिए सबसे ज्यादा पायरियर जिम्मेदार होता है। जिसे अभी भी लोग नजरअंदाज करते हैं। लोग हमारे पास तब आते हैं जब पायरिया से उनके दांत हिलने लगते हैं और उन्हें खाने में दिक्कत होने लगती है। हमारे समाज में मुंह के स्वास्थ्य की ओर तभी ध्यान जाता है जब खाने में रुकावट आती है।

वह बताती हैं कि पायरिया बैक्टीयरल इंफैक्शन या अनुवांशिक किसी भी कारण से हो सकता है लेकिन इसकी समय पर रोकथाम का एक ही तरीका है कि आप नियमित अपनी गम हेल्थ पर ध्यान दें।

जॉ (जबड़ा) रिकंसट्रक्शन की मास्टर डॉ पुनीता दुग्गल आहूजा दांतों की इतनी बड़ी विशेषज्ञ हैं कि वह अपनी विशेषज्ञता से अन्य डॉक्टर को भी विशेषज्ञ बनाती हैं। मल्टीनेशनल इंप्लांट कंपनी ओसटेम ने उन्हें अपनी टॉप टेन विशेषज्ञ ट्रेनर के रूप में फैकल्टी रखा है। अपने एयरफोर्स अधिकारी पिता विंग कमांडर सतेन्द्र दुग्गल के साथ दुनिया भर में रहकर खुद को निखारने वाली डॉ पुनीता बड़ी आत्मविश्वासी हैं।

उन्होंने 2008 में बैंगलुरु स्थित राजीव गांधी युनिवर्सिटी से बीडीएस परीक्षा में टॉप किया था, इसके बाद एमडीएस किया और उसके डेंटल इम्प्लांटेशन में विशेषज्ञता हासिल की और उसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा।

वर्ष 2013 में उन्होंने अपने पति डॉ पुनीत आहूजा के साथ सेक्टर 15 में आरबीए डेंटल केयर की स्थापना की जो आज शहर का जाना माना डेंटल अस्पताल है। इस अस्पताल में दांत, मसूड़ों और पूरे जबड़े से संबंधित सभी परेशानियों का हल है। वह बताती हैं कि कैंसर सर्वाइवर को हमारी सेवाओं की बड़ी जरूरत पड़ती है और भगवान की कृपा है कि हमारे यहां कभी कोई निराश नहीं हुआ। वह कहती हैं कि जॉय ऑफ सेलिब्रेशन तभी बनता है जब आप जॉय ऑफ ईटिंग कर सकें। डॉ पुनीता बताती हैं कि उन्होंने ऐसे बहुत लोग देखे हैं जिनके जीवन में भोजन बहुत महत्व रखता है। ऐसे लोगों के लिए दांत भी निश्चित रूप से बहुत बड़ा महत्व रखते हैं।

जिद है कि हमारी बेटियां पढ़ें-बढ़ें : दीपक यादव

फरीदाबाद। अंसल यूनिवर्सिटी से एमबीए करने वाले युवा दीपक यादव ने जो राह चुनी वह आसान नहीं थी, लेकिन आज उनके दोस्तों, रिश्तेदारों और परिजनों को उनपर फख्र होता है। बिना किसी बैकग्राउंड और अनुभव के उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में सीबीएसई का स्कूल खोलकर लोगों को चौंका दिया। नाम रखा विद्यासागर इंटरनेशनल स्कूल। लोगों ने उनके निर्णय पर टीका टिप्पणी की कि गांव में कौन तुम्हें इतने पैसे देगा। स्कूल गांव में नहीं चलने वाला है, यदि बनाना ही है तो यहां के स्टैंडर्ड का बनाओ। आदि आदि जितने मुंह उतनी बातें उन्हें सुनने को मिलतीं। लेकिन दीपक यादव के पास अपने पिता धर्मपाल यादव और मां दर्शना यादव का आशीर्वाद था, सो स्कूल तो चल पड़ा।

पिताजी धर्मपाल यादव स्कूल के चेयरमैन थे। उन्होंने पहले ही वर्ष बेटियों को निशुल्क प्रवेश देने की घोषणा कर दी जिससे कि ग्रामीण परिवेश में भी बेटियों को प्राइवेट स्कूल में भेजने के लिए माता पिता तैयार हो जाएं। उसका असर भी हुआ। आज स्कूल में बेटों से ज्यादा बेटियां शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। दीपक यादव बताते हैं कि यहां देखने में आता था कि लोग बेटियों को पढ़ने ही नहीं भेजते थे और अधिकांश सरकारी स्कूलों में ही भेजते थे। यहां प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा लेने का अधिकार जैसे बेटों के लिए आरक्षित था। लेकिन विद्यासागर इंटरनेशनल स्कूल ने लोगों की सोच को बदलने में कामयाबी प्राप्त की। हालांकि इसके लिए वही लोग खुद ही बधाई के पात्र हैं।

दीपक यादव ने बताया कि हमारा काम था कोशिश करना लेकिन चलने का काम अभिभावकों का था, सो उन्होंने किया। आज विद्यासागर इंटरनेशनल स्कूल इस क्षेत्र का सबसे बड़ा प्राइवेट सीबीएसई स्कूल है। जहां से बच्चे अकादमिक के साथ साथ खेलों में भी अपनी पहचान बना रहे हैं। हमारे स्कूल में पांच पांच खेल अकादमियां संचालित हो रही हैं। इनमें क्रिकेट की अकादमी मशहूर क्रिकेटर युवराज सिंह के निर्देशन में चल रही है।

स्कूल के निदेशक दीपक यादव ने बताया कि उनके स्कूल का आदर्श वाक्य संस्कार ही शिक्षा है। आज सभी की जुबान पर चढ़ गया है। हमने लोगों को बताया कि एक संस्कारी बच्चा समाज और देश के लिए कैसे महत्वपूर्ण है और आज के समय में संस्कारों का क्या महत्व है। अच्छी बात यह है कि लोग समझते हैं और उनका रुख सकारात्मक है।

क्षेत्र में बच्चों की शिक्षा के साथ मांओं को जोड़ने की पहल भी हमने की। मदर्स डे पर स्कूल में जोरदार कार्यक्रम किया जाता है और मांओं को उसमें भागीदारी के लिए आमंत्रित किया जाता है। उन्हें प्रेरित किया गया कि उनके सामने बच्चा कैसा परफॉर्म करता है, वह खुद आकर देखें। शुरु में लोगों ने निर्णय को भी शंका की दृष्टि से देखा लेकिन अब मांएं खुलकर इन कार्यक्रमों में भागीदारी करती हैं, बच्चे और मां संग संग रैंपवॉक भी करते हैं।

उन्होंने बताया कि हमारे दोनों स्कूलों में टीचर्स की ट्रेनिंग पर बहुत जोर दिया जाता है क्योंकि बच्चों को गढ़ने का काम उन्हें ही करना है।

आज पारिवारिक शिक्षा भी जरूरी : नन्दराम पाहिल

फरीदाबाद। शिक्षाविद नन्दराम पाहिल एक ऐसा नाम हैं जिनके बारे में लोग कहते हैं कि वह सामाजिक शिक्षक हैं। कई स्कूलों का संचालन करने वाले पाहिल यूनाईटेड प्राइवेट स्कूल्स एसोसिएशन के प्रधान भी होने से विशेष हो जाते हैं। उनके नेतृत्व में स्कूल संचालक निरंतर नई जानकारियों से लबरेज रहते हैं।

वर्ष 1991 में पहला स्कूल खोलने वाले नन्दराम पाहिल आज पांच स्कूलों का संचालन करते हैं। वह कॉलोनियों में अच्छे स्कूलों का संचालन करना चाहते थे इसलिए उन्होंने कॉलोनियों का रुख किया। पाहिल का कहना है कि कॉलोनी के निवासी अपने बच्चों को बड़े महंगे स्कूलों में नहीं पढ़ा सकते क्योंकि उनकी कमाइयां सीमित हैं। इसलिए उन्हें अफोर्डेबल स्कूलों की जरूरत है। मैं यह मानता हूं कि व्यक्ति को अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए किसी का कर्जदार होने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए। सभी को सहजता से शिक्षा मिलनी चाहिए।

करीब पांच हजार बच्चों को शिक्षा दे रहे नन्दराम पाहिल का दावा है कि नई शिक्षा नीति से बच्चों की पढ़ाई में स्किल्स का समावेश बढ़ेगा। सरकार का प्रयास है कि बच्चों को स्कूल के समय ही अपने भविष्य के कामकाज के बारे में जानकारी मिल जाए। हालांकि मेरा स्पष्ट रूप से मानना है कि थ्योरी की जगह पर प्रैक्टिकल पर जितना ज्यादा ध्यान दिया जाएगा। उतना भारत आगे बढ़ेगा।

वह कहते हैं कि बच्चों को पढ़ाने से पहले शिक्षक को पढ़ाना जरूरी है। एक शिक्षक ही बच्चों को योग्य नागरिक बनाता है। इसलिए हम अपने शिक्षकों को शिक्षा का असली महत्व बताते हैं क्योंकि जो शिक्षा का महत्व जानता होगा, वही शिक्षा का उजाला बांट सकता है।

नन्दराम पाहिल कहते हैं कि आज बच्चों को पारिवारिक ज्ञान दिए जाने की सबसे ज्यादा जरूरत है। एक बच्चे को अपने परिवार में व्यवहार के बारे में पता होगा तो वह समाज में भी व्यवहार को समझेगा। ऐसा व्यक्ति ही एक सजग, जागरुक, योग्य, ईमानदार नागरिक बनेगा। नन्दराम पाहिल मेधावी और खिलाड़ी बच्चों को बड़ी स्कॉलरशिप देने से कभी भी पीछे नहीं हटते हैं।

व्हाइट प्रिंट एक्सक्लूसिव

भविष्य नहीं पता, लेकिन अच्छा काम करेंगे

- फरीदाबाद नगर निगम की वर्तमान पार्षद एवं पूर्व महापौर सुमन बाला

फरीदाबाद। उनकी कहानी फीनिक्स पक्षी के जैसी लगती है। वर्ष 2016 में मीडियाकर्मी पति सचिन खेड़ा की अचानक मृत्यु ने उन्हें हिलाकर रख दिया था। पता नहीं था कि घर परिवार कैसे चलेगा, लेकिन मीडिया के साथियों के समर्थन ने उनके अपने हौंसले को ताकत दी। उन्होंने खुद को और बच्चों को संभाला।

अगले वर्ष होने वाले नगर निगम चुनाव में मीडिया संगठनों ने सचिन के पक्ष में लॉबिंग की और उन्हें पार्षद का टिकट दिलवाया और जीत भी प्राप्त की। अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित मेयर की सीट भी उन्हें मिली। उन्होंने समाज के प्रति अपना आभार जताया। लेकिन बिना पति के अपने बच्चों को पालने में उन्होंने खुद को झौंक दिया। अब एक बार फिर उन्हें 2025 में पार्षद बनने का अवसर प्राप्त हुआ है।

हम बात कर रहे हैं वर्तमान पार्षद एवं पूर्व मेयर सुमन बाला की। उनके जीवन को हर कोई सलाम कर रहा है। उनसे बात करने पर लगता है कि वह एक सच्चे जनप्रतिनिधि के रूप में खुद को जनता की सेवा में समर्पित कर चुकी हैं। कहती हैं कि हम अपने फरीदाबाद को स्वच्छ एवं स्वस्थ देखना चाहते हैं। इसके लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। इसमें हमें हमारे सांसाद, मेयर और विधायक तीनों का सक्रिय सहयोग मिल रहा है।

सुमन बाला बताती हैं कि नगर निगम फरीदाबाद की अधिकांश सेवाएं ऑनलाइन हो चुकी हैं। जिससे हम उम्मीद करते हैं कि जनता को अपना काम जल्द करवाने में मदद मिलेगी। हालांकि वह इस बात से भी इनकार नहीं करती हैं कि अधिकांश लोगों को ऑनलाइन सिस्टम समझ नहीं आता है, इस कारण से वह कई बार फॉर्म नहीं भर पाते हैं और जरूरी जानकारियां अटैच नहीं कर पाते हैं। इस वजह से भी कई बार शिकायतें हमें आती हैं। लेकिन इस बारे में संबंधित अधिकारियों कर्मचारियों को लोगों की मदद करने के लिए कहा जाता है। आखिरकार सरकार हमारी है और हमें अपनी सरकार अच्छाइयां भी लोगों को बतानी हैं और लोगों को पेश आने वाली समस्याएं सरकार को बतानी है।

वह बताती हैं कि आज टाउन में सबसे बडा काम पुरानी सीवर की

आस्था को है शिक्षा के प्रचार प्रसार का जुनून

पंचकूला में जन्मी आस्था गुप्ता फरीदाबाद के सेक्टर 9 में डीसी मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल की प्राचार्या हैं। बेहद युवा उम्र में स्कूल की कमान संभालकर उन्होंने अपने पिता समाजसेवी पवन कुमार गुप्ता और मां ज्योति गुप्ता का नाम तो रोशन किया ही है, साथ में युवाओं के सामने एक मिसाल भी पेश कर दी है कि आप ठान लोगे तो पा लोगे। एमए इंगलिश, एमबीए और बीएड पढ़ीं आस्था गुप्ता ने अपने माता-पिता के साथ ही स्कूल का संचालन करने का अनुभव प्राप्त किया। वह 15 वर्षों से स्कूल में सक्रिय हैं जिसने शिक्षा के प्रसार की उनकी भूख को प्रतिदिन बढ़ाया है। वह कहती हैं कि हर व्यक्ति को शिक्षा का अधिकार है क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करती है। वह अपने स्कूल में बच्चों को आध्यात्मिक वातावरण में शिक्षा दे रही हैं जिससे कि बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो पा रहा है।

लाइनों को बदलने का है। जो 1947 में डाली गई थीं। तब के आर्किटेक्ट ने तब की जरूरतों के हिसाब से यह लाइनें डाली थीं लेकिन अब जरूरतें बदल गई हैं और लोगों की संख्या बढ़ गई हैं। हम चाहते हैं कि लोगों के घरों में पीने का साफ पानी जाए, सड़कों पर पानी जमा न होने पाए और सीवर रुकने न पाए। इसके लिए सभी को मिलकर काम करने की जरूरत है।

सुमन बाला बताती हैं कि हम सब मिलकर अपनी अपनी जिम्मेदारियों को पहचानकर आगे बढ़ रहे हैं जिससे हमारा टाउन भी बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि बतौर मेयर उनका कार्यकाल अच्छा रहा, बहुत काम किया लेकिन इसी कोरोना के आने से हमारी बहुत सी योजनाएं पाइपलाइन में रह गईं। बहुत सारे काम हम नहीं कर पाए। हमें केवल ढाई साल का ही समय मिला। लेकिन एक अच्छी बात यह रही कि उस बुरे दौर में भी फरीदाबाद ने राहत कार्यों में नंबर एक का स्थान प्राप्त किया।

बताती हैं कि हमारे सांसद विधायक के आशीर्वाद से हमने फरीदाबाद की सेवा के लिए अनेक कार्यों पर अपने प्रयास जारी रखे हुए हैं। जब हम इतनी बड़ी आपदा से निकलकर बाहर आ गए हैं, अब तो ऐसी कोई समस्या ही हमारे सामने नहीं है। ऊपर से वर्तमान विधायक धनेश अदलखा नगर निगम की गहरी समझ रखते हैं। वह तीन तीन बार नगर निगम में पार्षद भी रहे हैं और वित्त कमेटी में भी रहे हैं। उनके विधायक बनने का लाभ बड़खल विधानसभा क्षेत्र के सभी 11 पार्षदों को मिलेगा।

वह कहती हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का नारा देकर समस्त महिला जगत को मजबूत करने का काम किया है। मेरा निजी तौर पर मानना है कि स्त्री के बिना समाज का संचालन मुश्किल काम है। लेकिन इसके लिए हमें भी पूरी तरह से तैयार होना होगा, अपनी क्षमताओं को कसना होगा। अब तो महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी क्षमता का लोहा मनवा रही हैं। बॉर्डर भी अब महिला सैनिकों की निगरानी में है।

उनका लक्ष्य है कि हरित फरीदाबाद बने जिससे कि अनेक समस्याएं अपने आप समाप्त हो जाएंगी। हमें भविष्य पता नहीं लेकिन हम अच्छा काम करेंगे।

माधवी हंस ने दिव्यांगता को बनाया अवसर

फरीदाबाद। 23 साल से वह स्पेशल अचीवर हैं लेकिन उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती है। हम बात कर रहे हैं माधवी हंस की। जो स्पेशल अचीवर्स एनजीओ की अध्यक्ष हैं। वह किन्हीं कारणों से दिव्यांग रह गए या हो गए लोगों की मदद करने के लिए हमेशा आगे रहती हैं। बेशक उनकी खुद की कहानी बहुत ही कष्टकारी है लेकिन अब वह दूसरों के आंसू पौंछने में अपनी क्षमताओं का प्रयोग कर रही हैं। एक सड़क दुर्घटना में रीढ़ की हड्डी के बुरी तरह से फ्रेक्चर होने से उनके शरीर के कमर से नीचे का हिस्सा कमजोर हो गया है और वह व्हील चेयर का उपयोग करती हैं।

हम बात कर रहे हैं माधवी हंस की। जो एक बेहतरीन ऊर्जावान प्रेरक हैं। वह दिव्यांग जनों को नौकरी दिलाने, पढ़ाई के अवसर दिलाने, कृत्रिम अंग दिलाने, साइकिल रिक्शा दिलाने आदि का काम कर रही हैं। इसके साथ साथ वह दिव्यांग खेलों को भी बढ़ावा देने का काम कर रही हैं। उनकी मानें तो वह इस संसार में विशेष कार्य करने के लिए भगवान द्वारा चुनी गई हैं। खुद पेंटिंग करती हैं और उनकी कलाकृतियां लोगों को विस्मित करती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी मिलने के दौरान उन्होंने अपनी कला से परिचित कराया तो वह बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें खूब शुभकामनाएं दीं। वह कहती हैं कि व्यक्ति शारीरिक लिमिट के कारण सबसे अधिक टूटता है लेकिन इस स्थिति को हमें सकारात्मक लेना है। इसके बाद स्थिति बदल जाएगी। वह कहती हैं कि हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए सपने देखने की जरूरत है। जब सपने देखेंगे तो उन्हें साकार करने के लिए भी प्रयास करेंगे और सफल भी होंगे।

माधवी हंस का मानना है कि संसार का हर व्यक्ति अपने सपने पूरे करने का प्रयास करता है तो स्पेशल अचीवर्स का तो पहला हक है अपने सपनों को पूरा करने के लिए। शरीर का एक हिस्सा कमजोर रह गया तो क्या हुआ। पूरा शरीर तो बेकार नहीं हुआ है। क्या पता कि भगवान ने हमें विशेष अवसर विशेष कार्यों को पूरा करने के लिए ही दिया हो। डिसेबल्ड बेचारे नहीं हैं। जीवन की चाह रखने वाले किसी पर भी बोझ नहीं हो सकते। हम हमारे जीवन में वह करते और पाते हैं जो हम हमारे बारे में नजरिया रखते हैं। डिसेबिलिटी के साथ वह अपने भाई के बिजनेस में साथ हैं। कंपनी तो अच्छी चल ही रही है, भाई भी दूसरे कामों में हाथ आजमाने का प्रयास कर पा रहे हैं। ऐसा तभी हो सकता है जब आपका हाथ बंटाने वाला कोई हो।

हाल ही में उन्होंने व्हीलचेयर बॉलीबॉल का आयोजन कर सभी को चौंका दिया है। इतना बड़ा आयोजन देखकर लोग हैरत में रह गए। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री, राज्यमंत्री, मेयर, विधायक आदि कितने की जनों ने शिरकत की। जिससे माधवी को और हौंसला मिला है। उन्होंने बताया कि वह सरकार से इनडोर स्टेडियम बनाने की मांग कर रही हैं। इसके बन जाने के बाद फरीदाबाद के दिव्यांग खिलाड़ियों को सहूलियत मिलेगी वहीं अन्य दिव्यांग भी अपनी समस्याओं को पीछे छोड़कर उत्साह और उमंग का दामन थाम सकेंगे।

लाल किताब एक्सपर्ट हैं सर्वोत्तम ऋषि

अपने युवा काल से ज्योतिष की तरफ खिंचाव महसूस करने वाले सर्वोत्तम ऋषि को लोग गुरुजी लाल किताब वाले के नाम से भी जानते हैं। अपनी दैनिक समस्याओं में राहत पाने के लिए उनके पास देशभर से लोग आते हैं। हम इस आर्टिकल में उनके बारे में बता रहे हैं कि कैसे वह लाल किताब के एक्सपर्ट हो गए...

फरीदाबाद। उनका नाम सर्वोत्तम ऋषि है लेकिन लोग उन्हें गुरुजी लाल किताब वाले बोलते हैं। उनके पास लाल किताब में कहे गए छोटे छोटे उपाय होते हैं जो बड़े बड़े काम करते हैं। अनुभव की बात यह है कि अपने युवा काल से ज्योतिष में रुचि रखते थे जो अब उन्हें एक्सपर्ट बना चुका है। उनके पास मशविरा लेने के लिए दूर दूर से लोग चले आते हैं।

हमने उनसे पूछा कि कैसे लाल किताब की ओर आना हुआ। उन्होंने बताया कि पहले वैदिक ज्योतिष से शुरुआत हुई लेकिन उसमें बड़ी सीमाएं थीं और रेमेडी के उतने अच्छे नतीजे नहीं आते थे लेकिन लाल किताब का प्रयोग शुरू किया तो हालात बदल गए।

लोगों को लाल किताब सरल लगती है। इसके उपाय करने योग्य लगते हैं। आज किसी के घर की एक दीवार का रंग बदलने या कपड़े का रंग बदलने या आधा किलो दाल को दान करने जैसे उपाय से हालात बदलते दिखते हैं तो वह लाल किताब का मुरीद हो जाता है।

मूलरूप से पंजाब के अमृतसर के रहने वाले सर्वोत्तम ऋषि के पिता सरकारी अधिकारी थे, तो उनके साथ बहुत से शहर घूमे। चलते फिरते ही शिक्षा भी पूरी हुई। उसके बाद नौकरी पसंद नहीं थी इसलिए व्यापार किए, अनेक व्यापार किए। हालात खराब थे तो अनेक प्रकार की रेमेडी लीं लेकिन कोई लाभ नहीं होता था। मुझे मिले अधिकांश ज्योतिषी केवल पैसे बनाने और जातक को डराकर अपना धंधा जमा रहे थे। ऐसे में मुझे लाल किताब के कुछ उपाय मिले जिन्होंने मेरी जिंदगी को बदल कर रख दिया। फिर एक शुभचिंतक के कहने पर मैं खुद ही लाल किताब के उपाय लोगों को बताने लगा।

आज मेरे पास लाल किताब के विशेषज्ञ भी राय लेने आते हैं। मुझे गर्व है कि मैं लोगों की सेवा कर पा रहा हूं।

वह बताते हैं कि हमारे जीवन में ही सबसे बड़ी रेमेडी छुपी हुईहैं। हमें बिना किसी झिझक के अपने बड़े बुजुर्गों से अशीर्वाद लेते रहना चाहिए। इससे जिंदगी खुशनुमा बनने लगेगी। उनके अनुसार जीवन में पांच प्रकार के सुख मिलने ही चाहिए, इनमें दादा का सुख, पिता का सुख, शिक्षा का सुख, शादीशुदा जिंदगी का सुख और नर संतान का सुख। इनमें से कोई भी सुख कम होगा तो आपको अपने जीवन में कमियां काटने को दौडेंगी।

उनके अधिकांश उपायों में घरों में ज्योति जलाने से मना किया जाता है। इसके कारण के बारे में उन्होंने बताया कि सबसे सहज कारण तो यह है कि जहां भी ज्योति जलेगी, वहां ऑक्सीजन घटेगी। जहां पहले से ही लोगों की सांसें कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ रही हैं आपने उसमें से और ऑक्सीजन कम कर दीं तो उनकी हालात का अंदाजा आप लगा ही लीजिए। मेरा प्रयास रहता है कि लोगों को उनके दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में होने वाले सहज उपाय बताऊं और मैं इस काम में पूरी तरह से सफल भी हूं। लाल किताब के उपायों से शनि, शुक्र, राहु-केतु और गुरु-मंगल को ठीक किया जाता है। उसके बाद सब ठीक होने लगता है।

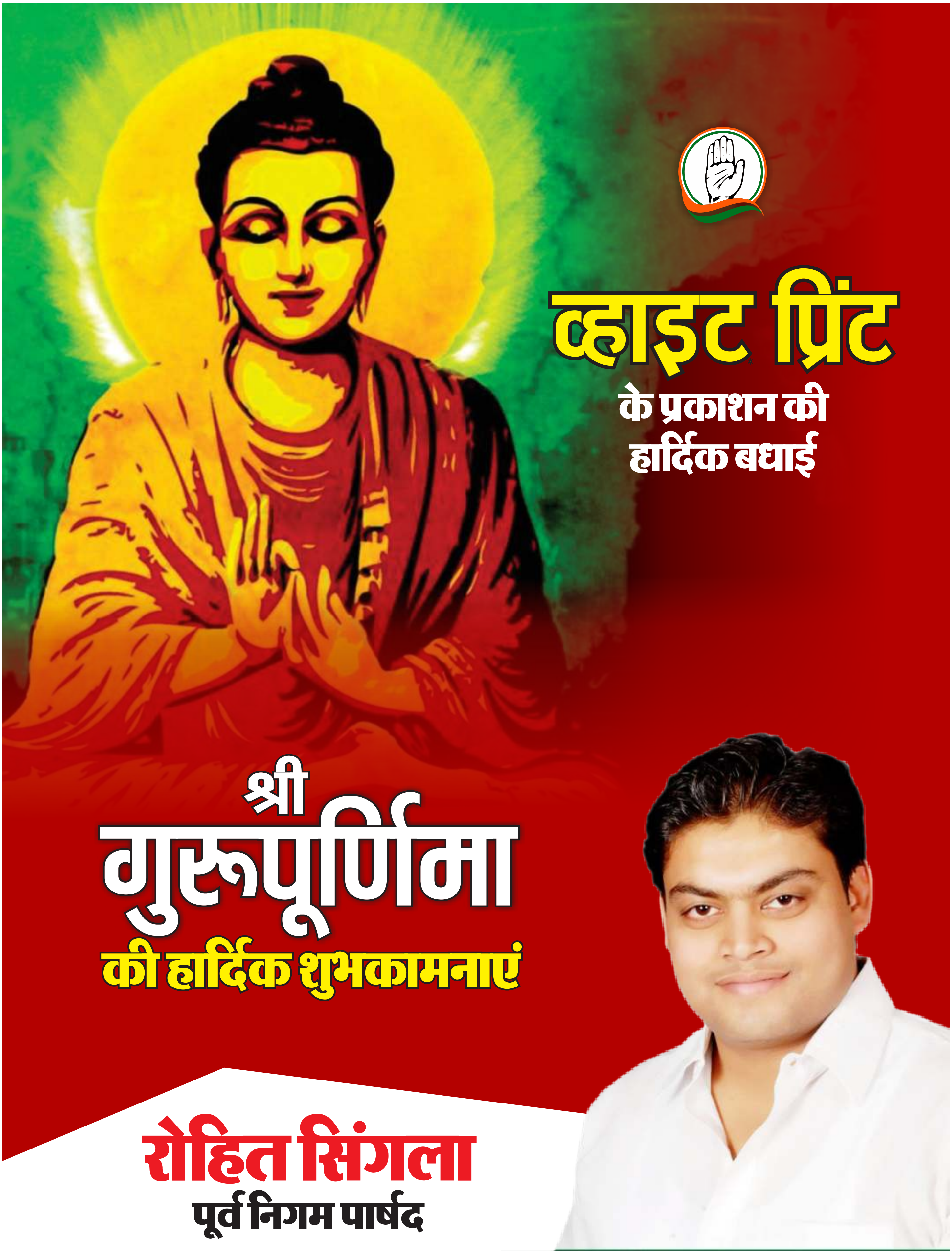
व्हाइट प्रिंट
के प्रकाशन की
हार्दिक बधाई
श्री
गुरूपूर्णिमा
की हार्दिक शुभकामनाएं
रोहित सिंगला
पूर्व निगम पार्षद

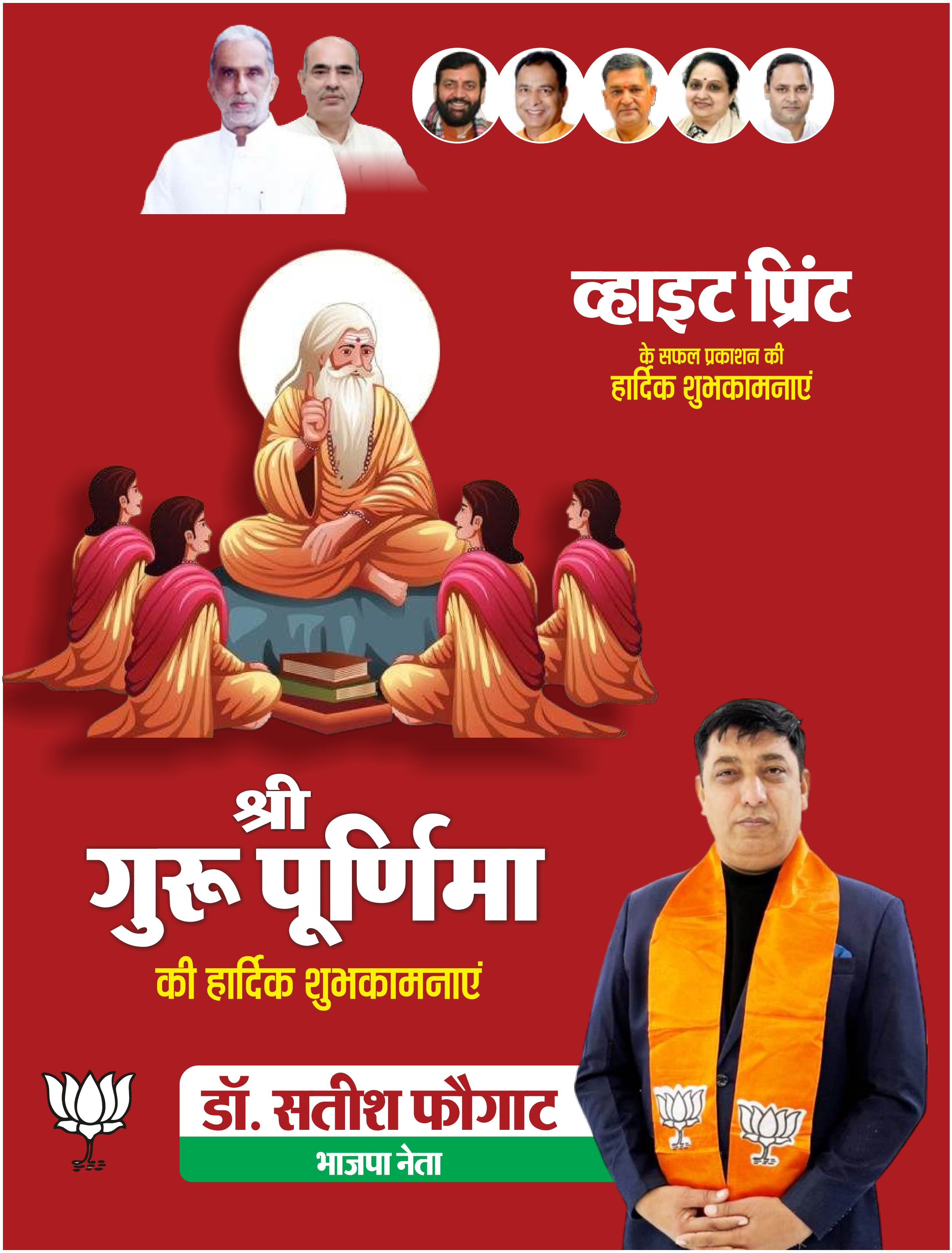

व्हाइट प्रिंट
के सफल प्रकाशन की
हार्दिक शुभकामनाएं
श्री
गुरू पूर्णिमा
की हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ. सतीश फौगाट
भाजपा नेता

समर्पण भाव वाली सेवा साधिका मधु गुप्ता

फरीदाबाद। समाजसेवा के क्षेत्र में अनेक लोगों ने बड़े नाम कमाए हैं लेकिन हम आपको परिचित करवा रहे हैं ऐसी समाजसेविका से जो नाम से दूर रहती हैं। जानकर दूर रहती हैं। उन्होंने पॉश माने जाने वाले सेक्टर नौ निवासी महिलाओं को किटी पार्टी से निकालकर समाज की सेवा के साथ जोड़ दिया है। उनके बनाए संगठन समाज को राह दिखाने का काम कर रहे हैं। उनके कॉल पर अनेक धार्मिक सामाजिक आयोजन हो रहे हैं तो हम उन्हें समर्पण भाव वाली सेवा साधिका न कहें तो क्या कहें।

मूलरूप से रोहतक की रहने वाली और फरीदाबाद में ब्याही वैश्य समाज की यह बेटी बहु और मां अनेक कारणों से खास है। फिलहाल वह समर्पण सेवा समिति ट्रस्ट का संचालन कर रही हैं। जिसके तहत सार्वजनिक प्याऊ लगाना, जरूरतमंद बेटियों की शादी में सहयोग करना, पंछियों के लिए दाने का इंतजाम करना, डिसपेंसरी का संचालन, घर घर से गौ सेवा के लिए मदद प्राप्त कर उसे गौशाला तक पहुंचाना उनके लिए दैनिक कार्य हैं। इस कार्य में उनके साथ बड़ी संख्या में सभ्रांत घरों की महिलाएं भी जुड़ी हुई हैं।

मधु गुप्ता ने बताया कि उन्होंने महिलाओं को अपनी दैनिक व्यवस्था बदले बिना समाज की सेवा करने के लिए छोटी छोटी कोशिश करने के लिए मनाने में सफलता पाई है। अब उन सबको भी मजा आता है और कभी मैं थमने लगूं तो वो नहीं थमने देतीं। उन्हें भी दूसरे चक्र में कोविड होने से घर में रहना पड़ा, जिसे वह अपने जीवन का भयावह समय मानती हैं। वह कहती हैं कि मैं घर पर बंद नहीं रह सकती। लेकिन हालात इतने खराब थे कि बचना मुश्किल था पर भगवान ने दूसरी जिंदगी देकर मुझपर बड़ा उपकार किया साथ ही समाज की और अधिक सेवा करने का संदेश दिया। जिसे मैं जिंदगी भर निभाऊंगी।

मधु गुप्ता अपने पति नरेश गुप्ता द्वारा स्थापित कंपनी में भी काम देखती हैं लेकिन यह विचार उन्हें समाज की सेवा के लिए प्रेरित करता है कि भगवान की करुणा से मिलने वाले इस जीवन का सदुपयोग करना है। इसके लिए दिन रात समाज की सेवा करना है।

व्हाइट प्रिंट एक्सक्लूसिव

वंचित वर्ग की सशक्त आवाज बन सकते हैं संजीव कुमार

फरीदाबाद। हाल ही में नगर निगम फरीदाबाद में बतौर पार्षद निर्वाचित हुए संजीव कुमार गांव नीमका के निवासी हैं और वार्ड 34 का नेतृत्व करते हैं। इससे पहले वह अपने गांव के भी सरपंच रहे हैं।

वाल्मीकि समाज से आने वाले संजीव कुमार की पहचान एक पढ़े लिखे सभ्रांत जनप्रतिनिधि की बन रही है। इसके पीछे उनके गांव की पंचायत में किए कार्यों का अनुभव भी काम आता है। दूसरा वह राजनैतिक धड़ेबंदी के समय में किसी के गुट में शामिल नहीं होते हैं। वह कहते हैं पूरी भाजपा मेरा परिवार है। जो भी मुझे काम सौंपा जाएगा, उसे पूरा करना मेरा ध्येय भी है और जिम्मेदारी भी। यही कारण है कि उनकी छवि निष्पक्ष पार्षद के रूप में बन रही है। लेकिन यह अकेला कारण नहीं है।

संजीव कुमार के दिल में अपने वार्ड को स्वच्छतम वार्ड बनाने की परिकल्पना है। इसके लिए वह काम भी कर रहे हैं। पिछले दिनों अपने वार्ड में सफाई का टेंडर देने के मामले में जब उनकी संस्तुति मांगी गई तो

> **भाजपा के टिकट पर पहली बार कोई वाल्मीकि पार्षद बनने को अपने जीवन की विशेष घटना मानते हैं संजीव**

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि जो वार्ड को साफ रख सके। उसे सफाई का काम दिया जाए। संजीव कुमार का दावा है कि वह भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़कर जीतने वाले पहले वाल्मीकि पार्षद हैं।

निजी आजीविका के लिए वह ठेकेदारी करते हैं। इसलिए उनके क्षेत्र के विकास कार्यों में कैसा सामान लग रहा है, इसके बारे में उन्हें पता रहता है। कहते हैं कि दाई से पेट नहीं छुपाया जा सकता है।

वह बताते हैं कि उनकी मां गांव की दाई थी। इस वजह से उनका हर घर में व्यक्तिगत संबंध था लेकिन हमारी गरीबी के कारण पढ़ाई बीच में छूट गई और मेहनत मजदूरी करके भी कमाना पड़ा। लेकिन कभी भी हार नहीं मानी। पर अपने बच्चों को खूब पढ़ा रहे हैं।

कहते हैं कि आज भाजपा नेतृत्व ने मुझे ऐसा अवसर दिया कि मैं अपने क्षेत्र की आवाज बड़े स्तर पर उठा सकता हूं। फिलहाल गांव के जोहड़ को सुंदर बना रहे हैं। जिससे कि वहां पर निवासी टहलने के लिए आ सकें और स्वास्थ्य लाभ ले सकें। वह गांव के स्कूलों को और बेहतर बनाने का लक्ष्य रखते हैं वहीं गांव में ही खेलों की सुविधाएं बढ़वाने को भी अपनी प्राथमिकता मानते हैं। वह अपने पीएचसी को भी 200 बैड के अस्पताल में बदलवाना चाहते हैं। इसके लिए अपने बड़े नेताओं के साथ निरंतर संपर्क में हैं।

कहते हैं कि पार्टी ने उन्हें ऐसा अवसर दिया है जिसका आभार करने के लिए उनके पास शब्द नहीं हैं। लेकिन उनकी पहली प्राथमिकता क्षेत्र की सफाई करवाना है क्योंकि स्वच्छ वातावरण में बीमारियां कम आती हैं और लोगों में भी बेहतरी के साथ जीवन जीने का भाव आता है।

शुभसमय वैदिक फाउंडेशन का प्रकाशन

व्हाइट प्रिंट के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं।

Dr Prashant Bhalla
Chairman-Manav Rachna

BK Usha
Rajyogini

RS Gandhi
Director-Crown

Dr NK Pandey
Chairman-Asian

Ashish Jain
Industrialist

KC Lakhani
Chairman-Lakhani Group

D. Suresh
Sr. IAS

Sameerpal Srow
IAS Retd.

Dayachand Yadav
Ex Councillor

Shailesh Jain
Heart Surgeon

Aman Goel
Young BJP Leader

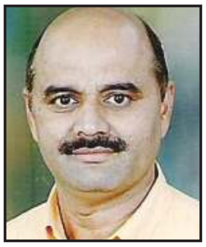
Satyavir Dagar
Educationist

Dvender Chaudhary
Ex Sr Deputy Mayor

Navdeep Chawla
Industrialist

Arun Bajaj
Industrialist

Dr, S S Bansal
MD-SSB Hospital

Jagdish Chaudhary
Educationist

Ravibhushan Khatri
Laghu Udyog Bharti

Yaduvendra Sandhu
Educationist

SS Gosain
Educationist

Pawan Gupta
Chairman-DC Model Schools

LC Bhardwaj
Educationist

CB Rawal
Educationist

Narayan Dagar
Educationist

Ramanik Prabhakar
GenSecty-MAF

Chandersen Sharma
Educationist

BR Bhatia
Maharani Paints

Dr Pratap Chauhan
Jiva Ayurveda

Dr Pawan Singh
Pawan Hospital

Dharmpal Yadav
Educationist

शहर में रक्त की कमी को दूर करने में जुटे

प्रेम पसरीचा

फरीदाबाद। हम अपने बच्चों को पाल पोसकर बड़ा करते हैं और हम चाहते हैं कि वो सफल बनें लेकिन हमें वास्तव में उन्हें लायक बनाना चाहिए। यह बात कही है उद्यमी प्रेम पसरीचा ने। जो कि फरीदाबाद शहर में लोहे के व्यापारी हैं। अनेक सामाजिक धार्मिक संगठनों के साथ जुड़े प्रेम पसरीचा रोटरी ब्लड बैंक के भी अध्यक्ष हैं जो आज शहर का सबसे बड़ा ब्लड बैंक है। फिलहाल किराए की इमारत में चलने वाला यह ब्लड बैंक उनके नेतृत्व में जल्द ही सेक्टर दो में अपने भवन में जाने वाला है। जाहिर सी बात है कि पसरीजा बेहद प्रसन्न हैं और उनके साथी भी इस उपलब्धि पर नाज कर रहे हैं।

1991 में फरीदाबाद आए प्रेम पसरीचा पहले नौकरी करते थे। जिसके यहां नौकरी करते थे। एक दिन उसी मालिक ने उन्हें खुद मालिक बनने की प्रेरणा दी, सहारा दिया और पसरीचा आज एक बड़े उद्यमी हैं। बताते हैं कि वह अपनी मदद करने वाले को कभी नहीं भूलते हैं। बताते हैं कि जिनके यहां काम करता था, वह हमेशा अपना काम करने के लिए प्रेरित करते थे। तब उन्होंने कहा कि फरीदाबाद जाकर काम करो। उन्होंने बहुत मदद की। वह अपने काम से छुट्टी लेकर मेरी मदद करते थे। उनके किरदार को मैं कभी भी नहीं भूल सकूंगा। आज जो भी हूं उसमें उनका प्रमुख योगदान है।

जो लोग कभी स्टील के लिए सैल पर निर्भर होते थे, उन्हें अब अपनी जरूरत पीपी स्टील पर फरीदाबाद में ही पूरी हो रही है। अपनी सामाजिक यात्रा के बारे में भी उन्होंने विचार साझा किए। पसरीचा बताते हैं कि हम सभी के संबंध व्यक्तिगत होते हैं। जब दो लोग एक दूसरे को परख लेते हैं तो फिर उनके बीच कोई तीसरा नहीं आ सकता। तीसरा तभी आएगा जब उनके बीच में कोई संशय होगा। हमारे जीवन में हमारी अपनी इमेज का बड़ा स्थान है। 1996 में मेरा बेटा ग्रेजुएशन करके आ गया तो मुझे बहुत सहारा मिला। जिसके बाद मैं यह कह सकता हूं कि हर माता पिता अपने बच्चों को बड़ा आदमी बनाना चाहते हैं, मैं कहता हूं कि बच्चों को योग्य बनाइए। वह बड़े तो खुद ही बन जाएंगे क्योंकि भगवान सभी को उनकी योग्यता के अनुसार देता ही है, इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह ही नहीं है।

प्रेम पसरीचा कहते हैं कि भगवान ने हमें बहुत दिया। हम उसका शुक्रिया अदा करते हैं। सभी को शुक्रिया अदा करना चाहिए। मानव सेवा समिति, रोटरी क्लब, रोटरी ब्लड बैंक आदि अनेक संस्थाओं के साथ जुड़े प्रेम पसरीचा सुबह 10 बजे रोटरी ब्लड बैंक पहुंच जाते हैं और समस्त जानकारियां लेकर और जरूरी निर्देशन देने के बाद ही अपने काम पर जाते हैं। कहते हैं सभी को गौसेवा अवश्य ही करनी चाहिए क्योंकि गौसेवा से कष्टों में कमी आती है।

Dronacharya Public School

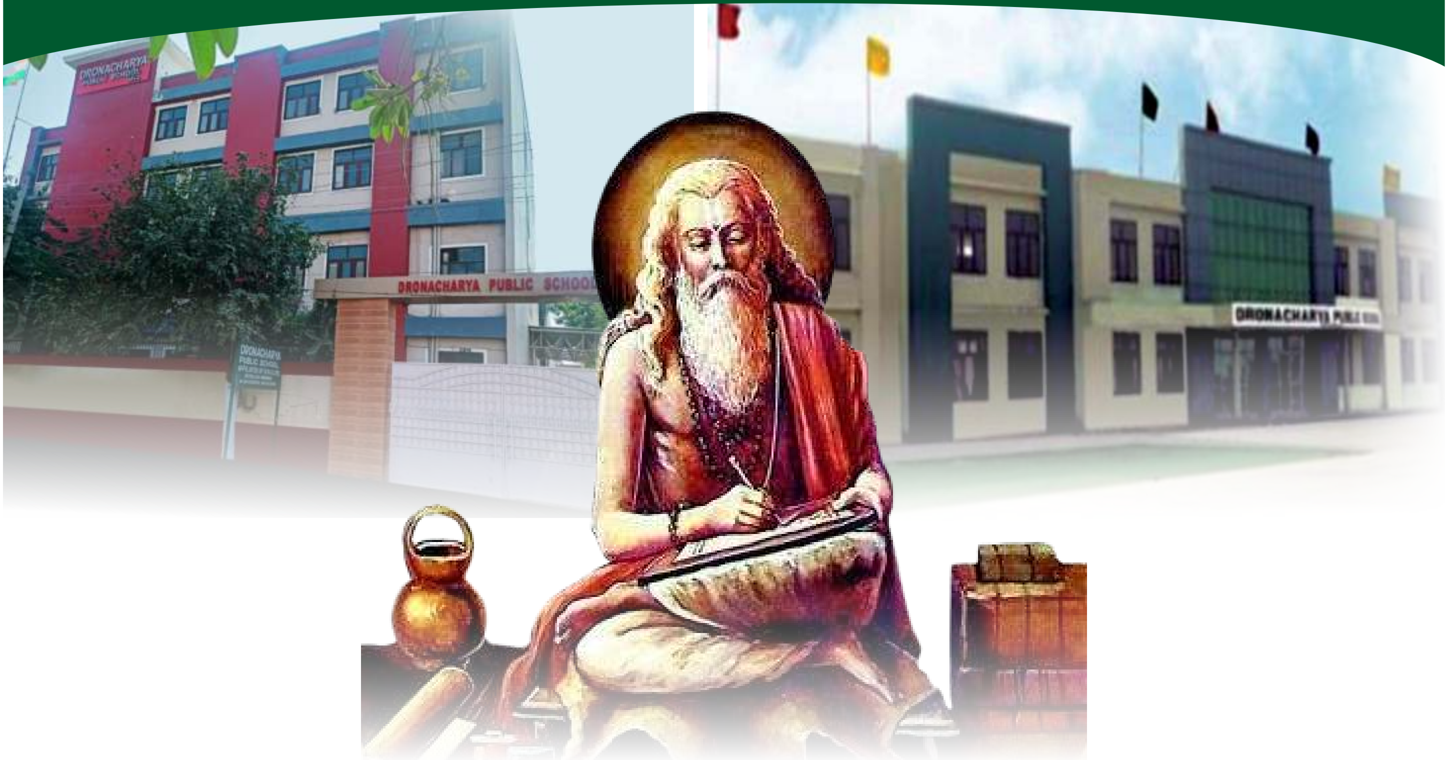

Happy Guru Purnima

&

Congratulations to team White Print
on its inaugural issue

Naveen Chaudhary
Chairman

Sector 23A, Faridabad

Sec 56, Samaypur Sohna Road, Kaboolpur, Faridabad.

(10+2 Affiliated to CBSE New Delhi)

for more info Call **9555444888**

Website www.dronacharyaschoolfbd.in
Email dronaschoolfbd@gmail.com

CHOKUS SECURITY Pvt. Ltd.

wishes you all

Happy Guru Purnima

"As CEO, I am proud to lead a company that stands as the
first line of defense for businesses, institutions, and communities.
Our focus is not just on physical presence but on smart, responsive,
and ethical security that adapts to today's evolving threats and
of course it is happening due to blessings of my first Guru i.e. My Father."

Tapan Rawat CEO, CHOKUS SECURITY

Congratulations
to team
White Print
on its inaugural issue

SECURITY
CHOKUS
1999

Plot no. SCO 110 , Sector 2, above HDFC bank,
Ballabgarh, Faridabad, Haryana 121004
Phone: 098990 43575